CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

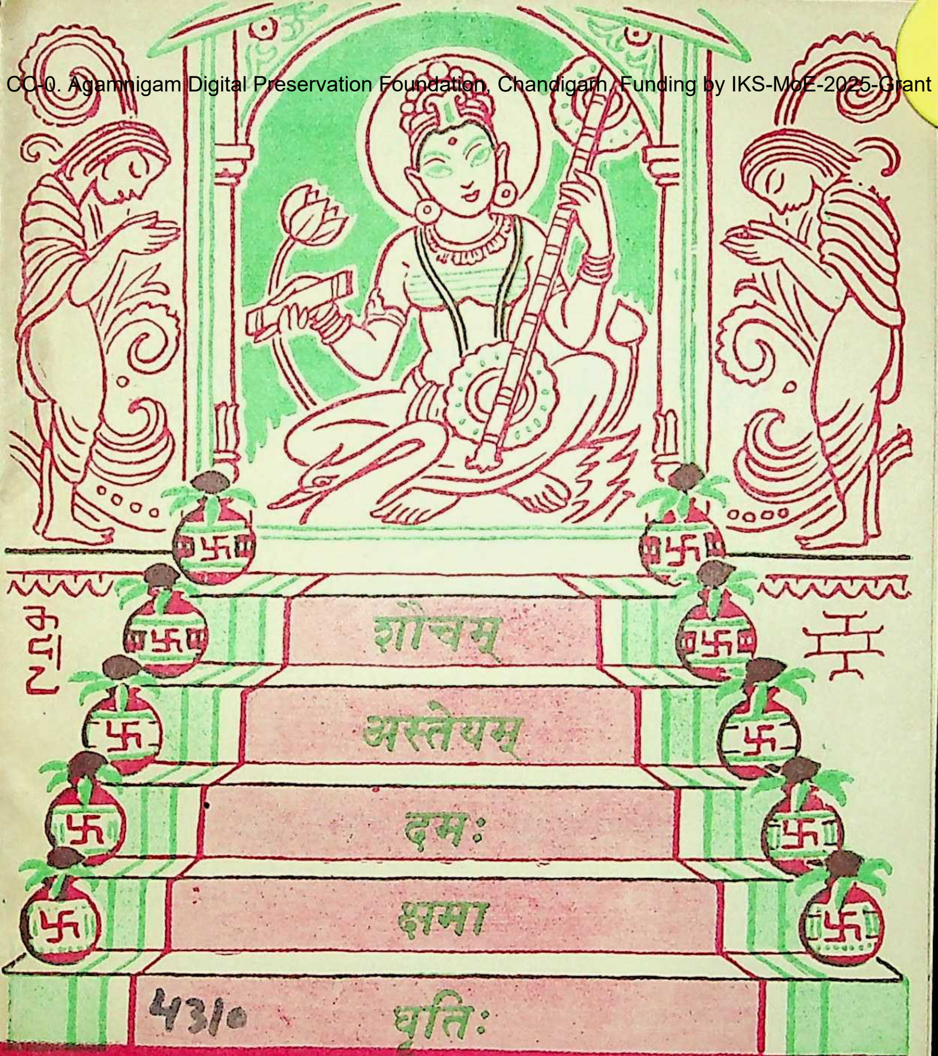

4310

संस्कृत पाठमाला ३

राहुल सांकृत्यायन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

श्रीविद्याभवन संस्कृत ग्रन्थमाला २७

॥ श्रीः ॥

संस्कृत पाठमाला

तृतीय पुस्तक

लेखकः—

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी-१

१९६७

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

प्रकाशक : चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी

मुद्रक : विद्याविलास प्रेस, वाराणसी

संस्करण : द्वितीय, वि० संवत् २०२४

मूल्य—

प्रथम पुस्तक ०—६० द्वितीय पुस्तक ०—८५ तृतीय पुस्तक ०—८५

चतुर्थ पुस्तक ०—८५ पञ्चम पुस्तक १—०० १—५ पुस्तक ४—१५

State Museum Library Lucknow

© The Chowkhamba Vidyabhawan,
Chowk, Varanasi-1
(INDIA)
1967

Phone : 3076

4310

प्रधान कार्यालय :—

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस

गोपाल मन्दिर लेन,

पो० आ० चौखम्बा, पोस्ट बाक्स नं० ८, वाराणसी—१

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

दो शब्द

३० वर्ष पहिले १९२६ ई० में मैं बौद्धधर्मके अध्ययन-के लिये सिंहल (श्री लङ्का) गया था। उस समय विद्यालंकार परिवेण (विहार) में रहते वहाँके भिक्षुओंको संस्कृत पढ़ाने लगा। सभी जगहोंके विद्यार्थियोंकी तरह वहाँके विद्यार्थी भी संस्कृत भाषासे बहुत डरते थे। उन्हें सुगम रास्तेसे ले जानेके लिये ये पाँच पोथियाँ लिखी गईं, जिनमें पाँचवींमें छन्द और अलंकार भी रख दिये गये। विद्यार्थियोंको ये बहुत सुगम प्रतीत हुईं। इन्हें सिंहल भाषा और सिंहल लिपिमें उसी समय छापा गया। अब तक इनके कितने ही संस्करण छप चुके हैं। मित्रोंने इन्हें हिन्दीके साथ छापनेके लिये कहा। पूर्ववत् छापना अच्छा न समझ मैंने बहुतसे परिवर्तन कर दिये। कितने ही नये उद्धरण दिये, और इनका रूप पाठमालाका बना दिया।

पाठक पहिली बार व्याकरणवाले भागको छोड़ सकते हैं। हाँ, पाठको कई बार दुहराना चाहिये।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

चौखम्बा संस्कृत ग्रन्थमाला एवं चौखम्बा विद्याभवनके स्वामी तथा संस्कृत ग्रन्थोंके सबसे बड़े उद्धारक और प्रचारक बाबू जयकृष्णदासजी गुप्तने बड़ी प्रसन्नता और तत्परतासे इनके प्रकाशनका भार अपने ऊपर लिया। यदि संस्कृतके सार्वजनीन प्रसारमें इनसे सहायता मिली, तो मैं अपने प्रयत्नको सफल समझूँगा।

मसूरी १३–२–५६ राहुल सांकृत्यायन

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

तृतीय पुस्तक

प्रथमः पाठः

विदूषकः—एष आर्य चारुदत्तः। तद् यावत् सांप्रतं उपसर्पामि। (उपसृत्य) स्वस्ति भवते।

चारुदत्तः—अये, सर्वकालमित्रं मैत्रेयः प्राप्तः। सखे, स्वागतं, उपविशतु।

विदूषकः—यद् भवान् आज्ञापयति। (उपविश्य) भो वयस्य, एष ते प्रियवयस्येन जीर्णवृद्धेन जातीकुसुमवासितः प्रावारकः प्रेषितः (प्रावारकं समर्पयति)।

चारुदत्तः—(गृहीत्वा सचिन्तः स्थितः)।

विदूषकः—भो, इदं किं चिन्तयसि ?

चारुदत्तः—वयस्य,।

सुखं हि दुःखान्यनुभूय शोभते, घनान्धकारेष्विव दीपदर्शनम्।
सुखात् तु यो याति नरो दरिद्रतां, धृतः शरीरेण मृतः स जीवति॥

विदूषकः—भो वयस्य, मरणाद् दारिद्र्याद् वा कतरत् ते प्रियम् ?

चारुदत्तः—वयस्य,।

दारिद्र्यान् मरणाद् वा मरणं मम रोचते न दारिद्र्यम्।
अल्पक्लेशं मरणं दारिद्र्यमनन्तकं दुःखम्॥

विदूषकः—भो वयस्य, अलं सन्तापेन। प्रियजनेभ्यो धनं दत्वा तव धनपरिक्षयः प्रतिपच्चन्द्रस्य इव अधिकतरं रमणीयम्।

चारुदत्तः—वयस्य, न मम धनं प्रति सन्तापः, पश्य—

सत्यं न मे विभवनाशकृताऽस्ति चिन्ता,
भाग्यक्रमेण हि धनानि भवन्ति यान्ति।

CC-0. AgamNigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

एतत् तु मां दहति नष्टधनाश्रयस्य,
यत् सौहृदादपि जनाः शिथिलीभवन्ति ॥

तद् वयस्य पूजिता मया गृहदेवताः, गच्छ त्वमपि चतुष्पथे देवीरर्चय ।

विदूषकः—न गमिष्यामि ।

चारुदत्तः—किमर्थम् ?

विदूषकः—यतः एवं पूज्यमाना अपि देवता न प्रसीदन्ति, तत् को गुणो देवतार्चने ?

चारुदत्तः—वयस्य, मा मा एवं । गृहस्थस्य अयं धर्मः, तद् गच्छ देवीरर्चय ।

विदूषकः—भो, न गमिष्यामि, अन्यः कोऽपि गच्छतु । मम च ब्राह्मणस्य कृतं सर्वमेव विपरीतं भवति, आदर्शे छाया इव वामतो दक्षिणा दक्षिणतो वामा । अन्यच्च, एतस्यां प्रदोषवेलायां इह राजमार्गे गणिका विटाः चेटा राजपुरुषाश्च संचरन्ति । तस्मात् मंडूकान्वेषिणः कालसर्पस्य संमुखं गत इदानीं मूषिक इव भविष्यामि । —मृच्छकटिक (शूद्रक) अंक १

विचुक्रुशुर्भूमिपतेर्महिष्यः, केशान् लुलुंचुः स्ववपूंषि जघ्नुः ।
विभूषणान्युन्मुमुचुः तदा, च पेतुर्बभंजुर्वलयानि चैव । —भट्टी

[विदूषक—यह आर्य चारुदत्त हैं, सो अब पास चलता हूँ । (पास जा) स्वस्ति हो आपकी ।

चारुदत्त—अहो, सब समयके मित्र मैत्रेय आये ? सखे, स्वागत, बैठें ।

विदूषक—जो आप आज्ञा देते हैं । (बैठ कर) हे मित्र, तेरे प्रियमित्र बूढ़ेने यह जूहीके फूलसे वासित चादर भेजी है । (चादरको देता है ।)

चारुदत्त—(ले कर चिन्ता के साथ खड़ा रहा ।)

विदूषक—हे, यह क्यों चिन्ता करते हो ?

चारुदत्त—मित्र, ।

दुःखके अनुभव करने (के बाद) ही सुख सुहाता है, जैसे घने अन्धकारमें दीपका दर्शन ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

सुखसे जो नर दरिद्रताको प्राप्त होता है, वह शरीर धरे भी मरा (सा) जीता है ।

विदूषक—हे मित्र, मरण और दरिद्रतामेंसे कौन तुझे अधिक प्रिय है ?

चारुदत्त—मित्र, ।

दरिद्रता और मरणमेंसे मुझे मरण पसन्द है, दरिद्रता नहीं ।
मरण थोड़े क्लेशवाला है, दरिद्रता न अन्त होनेवाला दुःख है ॥

विदूषक—हे मित्र, सन्ताप छोड़ो प्रियजनोंको दे कर तुम्हारे धनका नाश प्रतिपदाके चन्द्रकी तरह अधिकतर रमणीय है ।

चारुदत्त—मित्र, मुझे धनके लिये सन्ताप नहीं, देख—

सचमुच विभव के नाशके लिये मुझे चिन्ता नहीं है,
भाग्यके फेरसे धन होता है, जाता है ।
मुझे (तो) यह (बात) जलाती है, कि धन-आश्रयसे नष्ट हुये की
मित्रतासे भी लोग शिथिल हो जाते हैं ।

(अच्छा) तो मित्र, मैंने देवता पूज लिये, जा तू भी चौरस्ते पर देवियोंको पूजा दे आ ।

विदूषक—नहीं जाऊँगा ।

चारुदत्त—किस लिये ?

विदूषक—क्योंकि इस प्रकार पूजे जाते भी देवता नहीं प्रसन्न होते, फिर देवता-अर्चनासे क्या लाभ ?

चारुदत्त—मित्र, नहीं ऐसा नहीं । गृहस्थका यह धर्म है । सो जा देवियोंको पूज आ ।

विदूषक—हे, नहीं जाऊँगा, दूसरा कोई जावे । और मुझ ब्राह्मणका किया सभी उलटा होता, जैसे आरसीमें प्रतिबिंब बायें (अंग) का दाहिने, दाहिनेका बायें । और यह भी, कि इस प्रदोषके समय यहाँ सड़कपर वेश्यायें, भंडुए, दास, सरकारी अफसर घूमते हैं । इस लिये मेंढ़क ढूँढ़नेवाले काले साँपके सामने गये चूहेकी तरह इस समय मैं हो जाऊँगा ।

[राजा (दशरथ) की रानियोंने क्रन्दन किया, केश नोचे, अपनी देहको पीटा, आभूषणोंको निकाल फेंका, पछाड़ खाया, चूडियोंको तोड़ा ।]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

सांप्रतं (इस समय) उपसर्पामि (पास जाता हूँ) स्वस्ति (मंगल) स्वागतं (स्वागत) जीर्णवृद्धः (नाम है) जाती (जूही) प्रावारकः (चादर, शाल) समर्पयति (देता है) अनुभूय (अनुभव करके) कतरत् (दोमेंसे कौन) क्लेशः (दुःख) प्रतिपद् (परवा) विभवः (धन, ऐश्वर्य) नाशकृते (नाशके लिये) सौहृदं (मित्रता) प्रदोषः (प्रभात, गोधूली) राजमार्गः (सड़क) गणिका (वेश्या) विटः (भंडुआ) चेटः (दास) अन्वेषी (ढूँढनेवाला) विचुक्रुशुः (चिल्लाई, लिट् १. ३) महिषी (रानी) लुलुंचुः (नोचा, लिट्) जघ्नुः (पीटा, लिट्) पेतुः (गिरीं, लिट्) वलयः (चूड़ी)।

भू (होना) धातु अकर्मक, परस्मैपदी सेट् भ्वादिगणी भू *

लट् (वर्तमान काल)

भवति	भवतः	भवन्ति
भवसि	भवथः	भवथ
भवामि	भवावः	भवामः

भू + अ + ति = भो + अ + ति = भव् + अ + ति = भवति (है)।

लिट् (अति परेका भूत)

बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
बभूविथ	बभूवथुः	बभूव
बभूव	बभूविव	बभूविम

भू + अ = भू + व = भू + भू + व = बभूव (हुआ था)

लुट् (आसन्न भविष्य)

भविता	भवितारौ	भवितारः
भवितासि	भवितास्थः	भवितास्थ
भवितास्मि	भवितास्वः	भवितास्मः

भू + ता = भू + इ + ता = भो + इ + ता = भविता (होने वाला)

---

* एक से रूपोंवाले धातुओंको एक-एक गण (समूह) में एकत्रितकर वैयाकरणों ने संस्कृत धातुओंको नौ गणोंमें बाँटा है। जिनमें पहिला गण है भ्वादि।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लृट् (सामान्य भविष्य)

भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्यथ
भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्यामः

भू + स्य + ति = भू + इ + स्य + ति = भो = इ + स्यति = भविष्यति (होगा)।

लोट् (आज्ञामें)

भवतु, भवतात्	भवताम्	भवन्तु
भव, भवतात्	भवतम्	भवत
भवानि	भवाव	भवाम

भू + अ + तु = भो + अ + तु = भवतु (होवे)।

लङ् (आज छोड़ पहिलेका भूत काल)

अभवत्	अभवताम्	अभवन्
अभवः	अभवतम्	अभवत
अभवम्	अभवाव	अभवाम

अ + भू + अ + त् = अ + भो + अ + त् = अ + भव् + अ + त् = अभवत् (हुआ)।

विधि लिङ् [विधि (आदेश) करनेमें]

भवेत्	भवेताम्	भवेयुः
भवेः	भवेतम्	भवेत
भवेयम्	भवेव	भवेम

भू + ए + त् = भो + ए + त् = भवेत् (होवे)

अट् (गमन, घूमना) के सारे रूप भू जैसे होते हैं, केवल लिट् में निम्न रूप हैं—

आट	आटतुः	आटुः
आटिथ	आटथुः	आट
आट	आटिव	आटिम

अट् + अ = अट् + अट् + अ = अ + अट् + अ = आट (घूमता था, पर्यटन करता था)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लङ्—आटत्	आटताम्	आटन्

ऐसे ही निम्न धातुओंके रूप हैं—

लट् (प्रथम पुरुष एकवचन)	लिट् एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	
चित्—चेतति (चेतता है)	चिचेत	चिचेततुः	चिचेतुः	
अर्च—अर्चति (पूजता है)	आनर्च	आनर्चतुः	आनर्चुः	
मन्थ्—मन्थति (मथता है)	ममन्थ	ममन्थतुः	ममन्थुः	
खाद्—खादति (खाता है)	चखाद			
गद्—गदति (बोलता है)	जगाद			
नद्—नदति (नाद करता है)	ननाद			
निंद्—निन्दति (निन्दता है)	निनिन्द			
तर्ज्—तर्जति (डराता है)	ततर्ज			
गुंज्—गुंजति (गुनगुनाता है)	जुगुंज			
गर्ज—गर्जति (गरजता है)	जगर्ज			
कूज—कूजति (कूजता है)	चुकूज			
मूर्छ्—मूर्छति (मुरछाता है)	मुमूर्छ			
व्रज्—व्रजति (जाता है)	वव्राज			
ज्वल—ज्वलति (जलता है)	जज्वाल			
वद्—वदति (बोलता है)	उवाद	ऊदतुः	ऊदुः	प्र० पु०
	उवदिथ	ऊदथुः	ऊद	म० पु०
	उवद	ऊदिव	ऊदिम	उ० पु०
वह्—वहति (वहता है)	उवाह	ऊहतुः	ऊहुः	
वांछ्—वांछति (चाहता है)	ववांछ	ववांछतुः	ववांछुः	
बुक्क—बुक्कति (भूंकता है)	बुबुक्क	बुबुक्कतुः	बुबुक्कुः	
रट्—रटति (रटता है)	रराट	रेटतुः	रेटुः	

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

द्वितीयः पाठः

चारुदत्तः—(वसन्तसेनां प्रति) रदनिके, प्रदोषसमयः शीतार्तो रोहसेनः, ततः प्रवेशय एतं आभ्यन्तरं, एतेन प्रावारकेण छादय एनम् । (गति प्रावारकं प्रयच्छति ।)

वसन्तसेना—(स्वगतं) कथं परिजन इति मां अवगच्छति ? (प्रावारकं गृहीत्वा समाघ्राय च स्वगतं सस्पृहं) आश्चर्यं, जातीकुसुमवासितः प्रावारकः, अनुदासीनं अस्य यौवनं प्रतिभाति ।

चारुदत्तः—ननु रदनिके, रोहसेनं गृहीत्वा आभ्यन्तरं प्रविश ।

वसन्तसेना—(स्वगतं) मन्दभागिनी खलु अहं तव आभ्यन्तरं गन्तुम् ।

चारुदत्तः—ननु रदनिके, प्रतिवचनं अपि नास्ति ? कष्टं—

यदा तु भाग्यक्षयपीडितां दशां, नरः कृतान्तोपहितां प्रपद्यते ।
तदास्य मित्राण्यपि यान्त्यमित्रतां, चिरानुरक्तोऽपि विरज्यते जनः ॥

(विदूषकः रदनिका च उपसृत्य)

विदूषकः—भो, इयं सा रदनिका ।

चारुदत्तः—इयं सा रदनिका । इयं अपरा का ?
अविज्ञातावसक्तेन दूषिता मम वाससा ।

वसन्तसेना—(स्वगतं) ननु भूषिता ।

चारुदत्तः—छादिता शरदभ्रेण चन्द्रलेखेव दृश्यते ।
अथवा न युक्तं परकलत्रदर्शनम् ।

विदूषकः—भो, अलं परकलत्रदर्शनशंकया । एषा वसन्तसेना कामदेव-महोत्सवात् प्रभृति त्वां अनुरक्ता ।

चारुदत्तः—अये, इयं वसन्तसेना !

विदूषकः—भो वयस्य, एष खलु राजश्यालो भणति ।

चारुदत्तः—किम् ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

विदूषकः—एषा ससुवर्णा सहिरण्या वसन्तसेना नाम गणिकादारिका कामदेवमहोत्सवात् प्रभृति त्वामनुरक्ता, अस्माभिः बलात्कारेण अनुगम्यमाना तव गेहं प्रविष्टा । तद् इमां अस्माकं हस्ते समर्पय, अन्यथा आमरणान्तकं वैरं भविष्यति ।

वसन्तसेना—(स्वगतं) 'बलात्कारेण अनुगम्यमाना' इति अलंकृताऽस्मि एतैः अक्षरैः ।

चारुदत्तः—(सतिरस्कारं) मूर्खः सः । (स्वगतं) अये, कथं देवैरपि स्पृहणीया युवतिरियं । (प्रकाशं) भवति वसन्तसेने, अनेन अविज्ञानात् परिजनोपचारेण अपराद्धः शिरसा भवतीं अनुनयामि ।

वसन्तसेना—एतेन अहमेव अपराद्धा, आर्यं शिरसा प्रणम्य प्रसादयामि ।

विदूषकः—भो, द्वावपि युवां कलमकेदारौ इव अन्योन्यं शिरसा शिरः समागतौ, अहमपि अनेन स्वशिरसा द्वावपि प्रसादयामि (इति उत्तिष्ठति ।)

वसन्तसेना—(स्वगतं) न युक्तं अद्य ईदृशया आगतया इह मया प्रतिवस्तुं इति । (प्रकाशं) आर्य, यदि एवं अहं आर्यस्य अनुग्राह्या, तद् इच्छामि इमं अलंकारं आर्यस्य गेहे स्थापयितुम् । अलंकारस्य निमित्तं एते पापा मां अनुबध्नन्ति ।

चारुदत्तः—अयोग्यमिदं न्यासस्य गृहम् ।

वसन्तसेना—आर्य, अलीकं, पुरुषेषु न्यासा निक्षिप्यन्ते न पुनर्गृहेषु ।

चारुदत्तः—मैत्रेय, गृहाण इमं अलङ्कारम् ।

वसन्तसेना—अनुगृहीताऽस्मि (इति अलंकारं अर्पयति ।)

विदूषकः—(गृहीत्वा) स्वस्ति भवत्यै ।

चारुदत्तः—धिङ् मूर्ख, न्यासः खल्वयं न दक्षिणा !

विदूषकः—यदि एवं, तर्हि चौरैः अपहृतो भवतु अचिरेणैव कालेन ।

वसन्तसेना–आर्य, इच्छामि अहं अनेन आर्येण अनुगम्यमाना गेहं गन्तुम् ।

चारुदत्तः—मैत्रेय, अनुगच्छ भवतीम् ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

विदूषकः—त्वमेव कलहंसगामिनीं एतां अनुगच्छन् रासहंस इव शोभसे। अहं पुनर्ब्राह्मणः जनैः चतुष्पथोपनीतः उपहार इव कुक्कुरैः खाद्यमानो विपन्नो भविष्यामि।

चारुदत्तः—भवतु, स्वयमेव अनुगच्छामि तत्र भवतीम्। तत् राजमार्गयोग्यः प्रदीपः प्रज्वालितो भवतु।

विदूषकः—वर्धमानक, वर्धमानक, प्रज्वालय प्रदीपम्।

चेटः—(जनान्तिकं) अरे, तैलेन विना प्रदीपिकाः प्रज्वाल्यन्ते, अलम्।

चारुदत्तः—मैत्रेय,भवतु, कृतं प्रदीपिकाभिः, पश्य—

उदयति हि शशांकः कामिनीगंडपांडुः,
ग्रहगणपरिवारो राजमार्गप्रदीपः।
तिमिरनिकरमध्ये रश्मयो यस्य गौराः,
श्रितजल इव पंके क्षीरधाराः पतन्ति॥

(सानुरागं) भवति वसन्तसेने, इदं भवत्या गृहं, प्रविशतु भवती।

(वसन्तसेना सानुरागं अवलोकयन्ती निष्क्रान्ता)

—मृच्छकटिक (शूद्रक)

[चारुदत्त—(वसन्तसेनासे) रदनिका, प्रदोषकी वेला है, सरदी लगा रोहसेन है, अतः इसे भीतर ले जा, इस चादरसे इसे ढांक दे (इति, चादर देता है।)

वसन्तसेना—(अपने आपसे) क्या मुझे परिजन (सेवक-वर्ग) समझ रहे हैं। (चादरको लेकर सूंघ कर अनुरागके साथ अपने आपसे) जूहीके फूलोंसे बासी चादर है। इनका यौवन उदासीन नहीं जान पड़ता।

चारुदत्त—क्यों रदनिका, (मुँहमें) उत्तर भी नहीं है। कष्ट, दैवका मारा आदमी जब भाग्यके क्षयसे पीड़ित दशाको प्राप्त होता है, तब उसके मित्र भी अमित्र हो जाते हैं, चिरसे अनुरक्त जन भी विरक्त हो जाते हैं।

(विदूषक और रदनिका पास आ कर)

विदूषक—हे, यह है वह रदनिका।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

चारुदत्त—यह रदनिका, (तो) यह दूसरी कौन ? अनजानी मेरे मलिन वस्त्रसे दूषित की गई ।

वसन्तसेना—(अपनेसे) नहीं, भूषिता ।

चारुदत्त—शरद्के बादलसे छादित चन्द्ररेखा सी दीखती है । अथवा परस्त्रीको देखना उचित नहीं ।

विदूषक—हे, बस करो परस्त्री-दर्शनकी शंका को । यह वसन्तसेना कामदेवके महोत्सव (के दिन) से तुम पर अनुरक्त है ।

चारुदत्त—अहो, यह वसन्तसेना !

वदूषक—हे मित्र, यह राजाका साला कहता है ।

चारुदत्त—क्या ?

विदूषक—कामदेवके महोत्सव (के दिन) से यह सुवर्णसहित हिरण्यसहित वसन्तसेना नामक वेश्या-कन्या तुझपर अनुरक्त, हमारे द्वारा जबर्दस्ती पीछा की जाती तेरे घरमें घुस गई । सो इसे हमारे हाथमें सौंप दे, नहीं तो (हमारा) मृत्यु तकके लिये वैर हो जायेगा ।

वसन्तसेना—(अपनेसे) 'जबर्दस्ती पीछा की जाती' इन अक्षरोंसे अलंकृता हूँ ।

चारुदत्त—(तिरस्कारपूर्वक) मूर्ख है वह । (अपनेसे), अरे, देवोंके लिये भी स्पृहणीय है यह तरुणी । (प्रकट) आप वसन्तसेना, अजाने सेवककी तरह इस उपचारके लिये अपराधी मैं सिरसे आपसे क्षमा माँगता हूँ ।

वसन्तसेना—इसके कारण मैं ही अपराधिनी हूँ, (इसलिये) आर्यको शिरसे प्रणाम करके क्षमा माँगती हूँ ।

विदूषक—हे, तुम दोनोंने ही सस्य और क्यारी की तरह परस्पर सिरसे सिर मिला लिया, मैं भी इस सिरसे (तुम) दोनोंको प्रसन्न करता हूँ । (इति, उठ जाता है)

वसन्तसेना—(अपनेसे) आज यहाँ ऐसे आ मेरा यहाँ रहना उचित नहीं इति । (प्रकट) आर्य, यदि मैं आपकी ऐसी अनुग्रहपात्र हूँ, तो चाहती हूँ इस आभूषणको आर्यके घरमें रखना । आभूषणके लिये ये पापी मेरा पीछा कर रहे हैं ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

चारुदत्त—धरोहर के अयोग्य है यह घर।

वसन्तसेना—आर्य, असत्य, पुरुषोंके पास धरोहरें रक्खी जाती हैं, घरोंमें नहीं।

चारुदत्त—मैत्रेय, ले लो इस आभूषणको।

वसन्तसेना—अनुगृहीता हूँ (इति, आभूषण अर्पित करती है।)

विदूषक—(लेकर) स्वस्ति आपको।

चारुदत्त—धिक् मूर्ख ! धरोहर है यह, दक्षिणा नहीं।

विदूषक—यदि ऐसा, तो चोरों द्वारा चुराया जाय अचिर ही।

वसन्तसेना—आर्य, इस आर्यको पीछे ले मैं घर जाना चाहती हूँ।

चारुदत्त—मैत्रेय, आपके पीछे पीछे जाओ।

विदूषक—तुम ही इस कलहंसगामिनीके पीछे चलते हँस से शोभित होगे, में ब्राह्मण तो चौरस्ते पर लोगों द्वारा डाले गये पूजोपहारकी तरह कुक्कुरों द्वारा खाया जाता मारा जाऊँगा।

चारुदत्त—अच्छा, मैं स्वयं अनुगमन करूँगा आपका। सो सड़कके लायक दीपक जलाया जाये।

विदूषक—वर्धमानक, वर्धमानक, जला दीपक।

नौकर—(धीरे से) अरे, तेल के विना (ही) दीपिकायें जलाई जा रही हैं, हद है।

चारुदत्त—मैत्रेय, अच्छा, रहने दो दीपिकायें, देखो—

ग्रहोंके परिवारवाला कामिनियोंके कपोल-सा श्वेत चन्द्रमा सड़कका प्रदीप उग रहा है, जिसकी गोरी रश्मियाँ अन्धकार-समूह के बीच आश्रित जलवाले पंकमें दूधकी धारायें जैसी गिर रही हैं।

(स्नेहसहित) आप वसन्तसेना, यह आपका घर है, आप प्रवेश करें।

(वसन्तसेना अनुरागके साथ देखती निकल गई)]

लिङ् (आशीः) आशीर्वाद देना

भूयात्	भूयास्ताम्	भूयासुः
भूयाः	भूयास्तम्	भूयास्त
भूयासम्	भूयास्व	भूयास्म

भू + यास् + त = भू + या + त् = भूयात् (होवे)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लुङ् (सामान्य भूतकाल)

अभूत्	अभूताम्	अभूवन्
अभूः	अभूतम्	अभूत
अभूवम्	अभूव	अभूम

अ + भू + त् = अभूत् (हुआ)

लृङ् (क्रियाहेतुक क्रिया)

अभविष्यत्	अभविष्यताम्	अभविष्यन्
अभविष्यः	अभविष्यतम्	अभविष्यत
अभविष्यम्	अभविष्याव	अभविष्याम

अ + भू + इ + स्य + त् = अ + भो + इ + स्य + त् = अभविष्यत् (हुआ जो)

नट् (नाट्य करना), लुङ्

अनाटीत्	अनाटिष्टाम्	अनाटिषुः
अनाटीः	अनाटिष्टम्	अनाटिष्ट
अनाटिषम्	अनाटिष्व	अनाटिष्म

अ + नट् + इ + त् = अ + नट् + इ + स् + त् = अनाटीत् (नटन किया)

ऐसे ही निम्न धातु भी—

लट्		लुङ्	लिट्
मंड—मंडति	(भूषित करता है)	अमांडीत्	ममंड
पठ—पठति	(पढ़ता है)	अपाठीत्	पपाठ
जल्प—जल्पति	(बोलता है)	अजाल्पीत्	जजल्प
चुंब—चुंबति	(चूमता है)	अचुंबीत्	चुचुंब
भण—भणति	(बोलता है)	अभाणीत्	बभाण
क्रम—क्रामति	(टहलता है)	अक्रमीत्	चक्राम
फल—फलति	(फलता है)	अफालीत्	पफाल
स्खल—स्खलति	(फिसलता है)	अस्खालीत्	चस्खाल

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

	लट्		लुङ्	लिट्
जीव—	जीवति	(जीता रहता है)	अजीवत्	जिजीव
ष्ठीव्—	ष्ठीवति	(थूकता है)	अष्ठेवीत्	टिष्ठीव, टिष्ठीवतुः, टिष्ठीवुः
चर्—	चरति	(चलता, खाता है)	अचारीत्	चचार

तृतीयः पाठः

(ततः प्रविशति चारुदत्तो विदूषकश्च)

चारुदत्तः—अहो, अहो, साधु, साधु रेभिलकेन गीतं ! वीणा नाम असमुद्रोत्थितं रत्नम् ।

विदूषकः—भो, एहि गृहं गच्छावः ।

चारुदत्तः—अहो, सुष्ठु भावरेभिलकेन गीतम् ।

विदूषकः—मम तावत् द्वाभ्यामेव हास्यं जायते, स्त्रिया संस्कृतं पठन्त्या, मनुष्येण च काकलीं गायता । स्त्री तावत् संस्कृतं पठन्ती दत्तनवनास्या इव गृष्टिः अधिकं सूसुवायते, मनुष्योऽपि काकलीं गायन् शुष्कसुमनोदामवेष्टितो वृद्धपुरोहित इव मन्त्रं जपन् दृढं मे न रोचते ।

चारुदत्तः—वयस्य, सुष्ठु खलु अद्य गीतं भावरेभिलेन, न च भवान् परितुष्टः ? अपि च—

तं तस्य स्वरसंक्रमं मृदुगिरः श्लिष्टं च तंत्रीस्वनं,
वर्णानामपि मूर्छनान्तरगतं तारं विरामे मृदुम् ।
हेला संयमितं पुनश्च ललितं रागं द्विरुच्चारितं,
यत् सत्यं विरतेऽपि गीतसमये गच्छामि शृण्वन्निव ।

विदूषकः—भो वयस्य, आपणान्तरथ्याविभागेषु सुखं कुक्कुरा अपि सुप्ताः, गच्छावः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

चारुदत्तः—वयस्य, पश्य पश्य, एषोऽपि अन्धकारस्येव अवकाशं ददन् अन्तरिक्षप्रासादात् अवतरति भगवान् चन्द्रः।—मृच्छ० (शूद्रक)

[(तब प्रवेश करते हैं चारुदत्त और विदूषक)

चारुदत्त—अहो अहो, अच्छा (गायक) रेभिलने गाया। वीणा तो बिना समुद्रसे निकला रत्न है।

विदूषक—हे, आओ घर चलें।

चारुदत्त—अहो, बढ़िया रेभिलकजीने गाया।

विदूषक—मुझे तो दोनों से हँसी आती है—स्त्री संस्कृत पढ़ती और पुरुष काकली गाता। स्त्री संस्कृत पढ़ती नई नाथ पड़ी गायकी तरह बहुत सुसुआती है, पुरुष काकली गाता सूखे फूलकी मालासे वेष्टित बूढ़े पुरोहितकी तरह मंत्र जपता मुझे बिल्कुल नहीं रुचता।

चारुदत्त—मित्र, आज रेभिलजीने बहुत अच्छा गाया, और आप सन्तुष्ट नहीं (हुये)? और भी-उस स्वरोंके चढ़ाव को, मीठी वाणी से मिले हुये उस वीणा-नादको, मूर्छनाओंके बाद वर्णोंके विराममें कोमल तालको, सहसा रोके फिर दुहरा कर उच्चारित ललित रागको जो सचमुच गीतके समयके बीत जाने पर भी (इस समय) मैं सुनता सा चल रहा हूँ।

विदूषक—हे मित्र, हाटके अन्तकी सड़कों के भागों पर कुक्कुर सुखसे सो रहे हैं, चलें।

चारुदत्त—मित्र, देखो देखो, यह भगवान् चन्द्र भी अंधकारको मौका देते आकाशमहलसे उतर रहे हैं।]

रेभिलः (गायकका नाम) असमुद्रोत्थितं (समुद्रसे न निकला) भावः (जी) काकली (एक प्रकारका गीत) नास्या (नाकी नाथ) गृष्टिः (गाय) दाम (माला) संक्रमः (आरोह-अवरोह) तंत्री (वीणा) तारं (ऊँचा) हेला (सहसा) आपणान्तः (बाजारका छोर) रथ्या (सड़क) अन्तरिक्षं (आकाश)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

भ्वादि-गणी अकर्मक आत्मनेपद सेट् (एकार वाली) धातु एध (बढ़ना)

लट् (वर्तमान)—

एधते	एधेते	एधन्ते
एधसे	एधेथे	एधध्वे
एधे	एधावहे	एधामहे

एध् + अ + ते = एधते (बढ़ता है)।

लिट् (परोक्षवाला भूत)—

एधांचक्रे	एधांचक्राते	एधांचक्रिरे
एधांचकृषे	एधांचक्राथे	एधांचकृध्वे
एधांचक्रे	एधांचकृवहे	एधांचकृमहे

एध् + आं + कृ = एधां + कृ + कृ + ए = एधां + च + कृ + ए = एधांचक्रे (बढ़ा था)

एधांबभूव एधांबभूवतुः एधांबभूवुः (इत्यादि)

लुट् (आज छोड़े भविष्य)—

एधिता	एधितारौ	एधितारः
एधितासे	एधितासाथे	एधिताध्वे
एधिताहे	एधितास्वहे	एधितास्महे

एध् + इ + ता = एधिता (बढ़नेवाला होगा)

लृट् (सामान्य भविष्य)—

एधिष्यते	एधिष्येते	एधिष्यन्ते
एधिष्यसे	एधिष्येथे	एधिष्यध्वे
एधिष्ये	एधिष्यावहे	एधिष्यामहे

एध् + इ + स्यते = एधिष्यते (बढ़ेगा)

लोट् (आज्ञा)—

एधताम्	एधेताम्	एधन्ताम्
एधस्व	एधेथाम्	एधध्वम्
एधै	एधावहै	एधामहै

एध् + अ + तां = एधताम् (बढ़े)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लङ् (आज छोड़े भूत)—

ऐधत	ऐधेताम्	ऐधन्त
ऐधथाः	ऐधेथाम्	ऐधध्वम्
ऐधे	ऐधावहि	ऐधामहि

अ + एध् + अ + ते = ऐधत (बढ़ा)

लट्—एक०		लिट्—एक०	द्वि०	बहु०
वेष्ट—वेष्टते	(लपेटता है)	विवेष्टे	विवेष्टाते	विवेष्टिरे
चेष्ट—चेष्टते	(चेष्टा करता है)	चिचेष्टे		
गाध—गाधते	(अवगाहन करता है)	जगाधे		
नाथ—नाथते	(मांगता है)	ननाथे		
दध—दधते	(धारता है)	देधे	देधाते	देधिरे
दह—दहते	(जलाता है)	देहे		
वन्द—वन्दते	(वन्दना करता है)	ववन्दे		
मोद—मोदते	(मोद करता है)	मुमुदे		
स्पन्द—स्पन्दते	(हिलता है)	पस्पन्दे		
दद—ददते	(देता है)	ददे		
स्वद—स्वदते	(खाता है)	सस्वदे		
स्वाद—स्वादते	(,,)	सस्वादे		
यत—यतते	(प्रयत्न करता है)	येते		
ग्रन्थ—ग्रन्थते	(गांठ बांधता है)	जग्रंथे		
लोक—लोकते	(देखता है)	लुलोके		
अंग—अंकते	(अंकन करता है)	आनंके		
शंक—शंकते	(शंका करता है)	शशंके		
श्लाघ—श्लाघते	(प्रशंसा करता है)	शश्लाघे		
राज—राजते	(शोभा देता है)	रराजे		
ह्लाद—ह्लादते	(आह्लादित होता है)	जह्लादे		

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

दद् (देना) का लट् में

ददते	ददाते	ददिरे
ददिषे	ददाथे	ददिध्वे
ददे	ददिवहे	ददिमहे

चतुर्थः पाठः

सोऽध्यैष्ट वेदान् त्रिदशान् अयष्ट पितॄन् अपारीत् सममंस्त बन्धून् ।
व्यजेष्ट षड्वर्गमरंस्त नीतौ, समूलघातं न्यवधीद् अरींश्च ॥ १ ॥
न तज्जलं यन्न सुचारुपंकजं न पंकजं तद् यदलीनषट्पदम् ।
न षट्पदोऽसौ न जुगुंज यः कलं, न गुंजितं तन्न जहार यन्मनः ॥२॥
मरिष्यामि विजेष्ये वा हताश्चेत् तनया मम ।
हनिष्यामि रिपून् तूर्णं न जीविष्यामि दुःखितः ॥ ३ ॥
अध्यायच्छक्रजिद् ब्रह्म समाधेरचलन्न च ।
तमाह्वयत सौमित्रिरगर्जच्च भयंकरम् ॥ ४ ॥
अकुप्यद् इन्द्रजित् तत्र पितृव्यं चागदद् वचः ।
त्वमत्राजायथा देहमिहापुष्यः सुरामिषैः ॥ ५ ॥
इहाजीव इहैव त्वं क्रूरमारभथाः कथम् ।
नापश्यः पाणिमार्द्रं त्वं बन्धुत्वं नाप्यपेक्षथाः ॥ ६ ॥
अधर्मान्नात्रसः पाप, लोकवादान्न चाबिभेः ।
धर्मदूषण, नूनं त्वं नाजाना नाशृणोरिदम् ॥ ७ ॥

[उसने वेद पढ़े, देवोंके लिये यज्ञ किये, पितरोंको तृप्त किया, बन्धुओंका मान किया। छ तरहके शत्रुओंको जीता, नीतिमें रत रहा और दुश्मनोंको जड़से नाश किया ॥ १ ॥

वह जल नहीं, जो सुन्दर पंकजोंवाला नहीं, वह पंकज नहीं जिसमें भँवरे लीन नहीं। वह भँवरा नहीं जो सुन्दर गूँजता नहीं, वह गुञ्जन नहीं जिसने मनको हरा नहीं ॥ २ ॥

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

यदि मेरी सन्तानें मारी गयीं, तो मैं जीतूँगा या मरूँगा। जल्दी शत्रुओंको मारूँगा, दुखी हो नहीं जीऊँगा ॥ ३ ॥

मेघनाद ने ब्रह्मका ध्यान किया और समाधिसे विचलित नहीं हुआ। उसको लक्ष्मणने ललकारा और भयंकर गर्जन किया ॥ ४ ॥

वहाँ मेघनाद कुपित हुआ और चाचा (विभीषण) से बात बोला—'तू यहाँ पैदा हुआ यहाँ मद्य-मांससे पोषित हुआ ॥ ५ ॥

यहाँ जीवन बिताया, यहीं तूने क्रूर (कर्म) क्यों आरंभ किया ? भीगे हाथ को तूने नहीं देखा, बन्धुत्वकी भी पर्वाह नहीं की ॥ ६ ॥

पापी, अधर्मसे नहीं डरा, लोकनिन्दासे तूने भय नहीं खाया। धर्मदूषण, अवश्य तू इसे नहीं जानता, न यह सुना' ॥ ७ ॥]

अध्यैष्ट (पढ़ा, लिट् १. १) त्रिदशः (देवता) अपारीत् (पारण किया, लुङ्) सममंस्त (संमान किया,) षड्वर्ग (काम, क्रोध आदि) व्यजेष्ट (जीता) अरंस्त (रमण किया) न्यवधीत् (वध किया,) जहार (हरा, लिट्) विजेष्ये (जीतूंगा, लृट्) तूर्ण (तुरन्त) अध्यायत् (ध्यान किया) शक्रजित् (इन्द्रजित्, मेघनाद) आह्वयत (ललकारा) सौमित्रिः (लक्ष्मण) अगदत् (बोला) अजायथाः (तू पैदा हुआ) अपुष्यः (पुष्ट हुआ) आमिषं (मांस) अजीवः (तू जिया) आरभथाः (तूने आरंभ किया) आर्द्र (गीला) अत्रसः (डरा) अबिभेः (भय खाया) लोकवादः (लोकनिन्दा) अजानाः (जाना तूने ।)]

लिङ् (विधि आज्ञा)—

एधेत	एधेयातां	एधेरन्
एधेथाः	एधेयाथां	एधेध्वं
एधेय	एधेवहि	एधेमहि

• एध् + अ + त = एध् + इय् + त = एध + इ + त = एधेत (बढ़े)।

लिङ् (आशीः, आशीर्वाद देना)—

एधिषीष्ट	एधिषीयास्तां	एधिषीरन्
एधिषीष्ठाः	एधिषीयास्थां	एधिषीध्वं
एधिषीय	एधिषीवहि	एधिषीमहि

एध् + इ + सीय् + त = एध् + इ + सीय् + स् + त = एधिषीष्ट (बढ़े)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लुङ् (सामान्य भूत)—

ऐधिष्ट	ऐधिषातां	ऐधिषत
ऐधिष्ठाः	ऐधिषाथां	ऐधिध्वं
ऐधिषि	ऐधिष्वहि	ऐधिष्महि

अ + ऐध् + इ + स् + त = ऐधिष्ट (बढ़ा)

लृङ् (हेतु-भूत क्रिया)—

ऐधिष्यत	ऐधिष्येतां	ऐधिष्यन्त
ऐधिष्यथाः	ऐधिष्येथां	ऐधिष्यध्वं
ऐधिष्ये	ऐधिष्यावहि	ऐधिष्यामहि

अ + एध् + इ + ष्यत = ऐधिष्यत (यदि बढ़ेगा तो)

लट्	लिट्
एधते (कांपता है)	एधांचक्रे, एधांबभूव
म्रियते (मरता है)	मम्रिये (मर गया)
धरते (धरता है)	दध्रे
नयते (ले जाता है)	निन्ये
लभते (पाता है)	लेभे
भ्राजते (चमकता है)	बभ्राजे
कम्पते (कांपता है)	चकम्पे
स्तम्भते (थांमता है)	तस्तंभे
क्षमते (सहता है)	चक्षमे
भिक्षते (मांगता है)	बिभिक्षे
वर्षते (बरसाता है)	ववर्षे
भाषते (बोलता है)	बभाषे
ईहते (चाहता है)	ईहांचक्रे
काशते (प्रकाशता है)	चकाशे
रोचते (रुचता है)	रुरुचे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

वर्तते (विद्यमान है)	ववर्ते
वर्धते (बढ़ता है)	ववृधे
व्यथते (दुखता है)	विव्यथे
रमते (रमण करता है)	रेमे
याचते (मांगता है)	ययाचे

पञ्चमः पाठः

विदूषकः—भो, इदं अस्माकं गेहम् । वर्धमानक, उद्घाटय द्वारम् ।

चेटः—आर्यमैत्रेयस्य स्वरसंयोगः श्रूयते । आगत आर्यचारुदत्तः । तद्यावद् द्वारं अस्य ददामि । (तथा कृत्वा) आर्य, वन्दे । मैत्रेय, त्वामपि वन्दे । अत्र विस्तीर्णे आसने निषीदतं आर्यौ । (उभौ नाट्येन प्रविश्य उपविष्टौ) ।

विदूषकः—वर्धमानक, रदनिकां आकारय पादौ धावितुम् ।

चारुदत्तः—(सानुकम्पं) अलं सुप्तजनं प्रबोधयितुम् ।

चेटः—आर्य मैत्रेय, अहं पानीयं गृह्णामि त्वं पादौ धावय ।

विदूषकः—(सक्रोधं) भो वयस्य, एष इदानीं दास्याः पुत्रो भूत्वा पानीयं गृह्णाति, मां पुनर्ब्राह्मणं पादौ धावयति ।

चारुदत्तः—वयस्य मैत्रेय, त्वं उदकं गृहाण, वर्धमानकः पादौ प्रक्षालयतु ।

चेटः—आर्य मैत्रेय, देहि उदकम् । (विदूषकः तथा करोति, चेटः चारुदत्तस्य पादौ प्रक्षाल्य अपसरति ।)

चारुदत्तः—दीयतां ब्राह्मणस्य पादोदकम् ।

विदूषकः—किं मम पादोदकैः ? भूमावेव मया ताडितगर्दभेनेव पुनरपि लोठितव्यम् ।

चेटः—आर्य मैत्रेय, ब्राह्मणः खलु त्वम् ?

विदूषकः—यथा नागानां मध्ये डुण्डुभः, तथा सर्वब्राह्मणानां मध्येऽहं ब्राह्मणः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

चेटः—आर्य मैत्रेय, तथापि धाविष्यामि। (तथा कृत्वा) आर्य मैत्रेय, एतत् तत् स्वर्णभाण्डं, मम दिवा तव रात्रौ, तद् गृहाण। (इति दत्वा निष्क्रान्तः)

विदूषकः—(गृहीत्वा) अद्यापि एतत् तिष्ठति ? किमत्र उज्जयिन्यां चौरोऽपि नास्ति, य एतद्दास्याः पुत्रो निद्राचौरं नापहरति ? भो वयस्य, आभ्यन्तरचतुःशालकं प्रवेशयामि एनम्।

—मृच्छकटिक (शूद्रक)

[विदूषक—हे, यह हमारा घर है। वर्धमानक, खोल द्वार।

चेट (दास)—आर्य मैत्रेय की आवाज सुनाई देती है, आगये आर्य चारुदत्त। तो द्वार इनके लिये (खोल) दूँ। (वैसा करके) आर्य, वन्दे। मैत्रेय, तुम्हें भी वन्दे। इस बिछे आसन पर (आप दोनों) बैठें। (दोनों नाटकीय ढङ्ग से बैठे)।

विदूषक—वर्धमानक, रदनिकाको बुला, पैर धोने के लिये।

चारुदत्त—(अनुकम्पा के साथ) नहीं सोये आदमी को जगाना (नहीं चाहिये)।

चेट—आर्य मैत्रेय, मैं पानी लेता हूँ, तुम पैर धोओ।

विदूषक—(क्रोध के साथ) हे मित्र, यह दासी का बेटा होकर अब पानी लेगा और मुझ ब्राह्मण से पैर धुलवाता है।

चारुदत्त—मित्र मैत्रेय, तू पानी ले, वर्धमान पैर पखारे।

चेट—आर्य मैत्रेय, पानी दो (विदूषक वैसा करता है, चेट चारुदत्त के पैर पखार कर हट जाता है)।

चारुदत्त—ब्राह्मणको पादोदक दिया जाये।

विदूषक—पादोदक से मुझे क्या ? पीटे गदहे की तरह मुझे भूमि पर ही फिर लोटना है।

चेट—आर्य मैत्रेय, ब्राह्मण हो ना तुम।

विदूषक—जैसे नागों के बीच डोंडहा (जलसर्प), वैसे ही सारे ब्राह्मणों के बीच मैं ब्राह्मण हूँ।

चेट—आर्य मैत्रेय, तो भी धोऊँगा। (वैसा करके) आर्य मैत्रेय, यह है वह सुवर्ण-आभूषण, मेरा दिन में तेरा रात में; सो लो (देकर निकल गया)।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

विदूषक—(लेकर) आज भी यह है ही ? क्या यहाँ उज्जैनमें चोर भी नहीं है, जो दासीके बेटे इस नींद-चोर को नहीं चुरा ले जाता ? हे मित्र, भीतर चौसारमें इसे ले जाता हूँ ।]

प्रबोधयितुं (जगाने को) डुंडुभः (पानीका सांप)

भू (होना) धातुका प्रेरणा (णिजन्त) परस्मैपद में रूप—

लट् (वर्तमान)

भावयति	भावयतः	भावयन्ति
भावयसि	भावयथः	भावयथ
भावयामि	भावयावः	भावयामः

भू + इ + अ + ति=भो + इ + अ + ति = भो + ए + अ + ति=भाव् + अय् + अति = भावयति (हो आता है) ।

लिट्

कृके साथ	भावयांचकार	भावयांचक्रतुः	भावयांचक्रुः
भूके साथ	भावयांबभूव	भावयांबभूवतुः	भावयांबभूवुः
अस्के साथ	भावयामास	भावयामासतुः	भावयामासुः

लुट्

भावयिता भावयितारौ भावयितारः

लृट्

भावयिष्यति भावयिष्यतः भावयिष्यन्ति

लोट्

भावयतु, भावयतात् भावयतां भावयन्तु

लङ्

अभावयत् अभावयतां अभावयन्

लिङ् (विधि)

भावयेत् भावयेतां भावयेयुः

लिङ् (आशीः)

भाव्यात् भाव्यास्तां भाव्यासुः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लुङ्

अबीभवत्	अबीभवतां	अबीभवन्
अबीभवः	अबीभवतं	अबीभवत
अबीभवं	अबीभवाव	अबीभवाम

आत्मनेपद—लट्

भावयते भावयेते भावयन्ते (बाकी एध-सा)

लिट्

भावयांचक्रे भावयांचक्राते भावयांचक्रिरे

(एवं भावयांबभूव, भावयामास इत्यादि)

लुट्

भावयिता	भावयितारौ	भावयितारः
भावयितासे	भावयितासाथे	भावयिताध्वे
भावयिताहे	भावयितास्वहे	भावयितास्महे

लृट्

भावयिष्यते भावयिष्येते भावयिष्यन्ते

लोट्

भाव्यतां भाव्येतां भाव्यन्तां

लङ्

अभावयत अभावयतां अभावयन्त

लिङ् (विधि)

भावयेत	भावयेयातां	भावयेरन्
भावयेथाः	भावयेयाथां	भावयेध्वं
भावयेय	भावयेवहि	भावयेमहि

लिङ् (आशीः)

भावयिषीष्ट भावयिषीयास्तां भावयिषीरन्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लुङ्

अबीभवत	अबीभवेतां	अबीभवन्त

लृङ्

अभावयिष्यत्	अभावयिष्येतां	अभावयिष्यन्त

अन्य धातुके णिजन्त रूप—

(लट्)

(परस्मैपद)	(आत्मनेपद)	
पाठयति,	पाठयते	(पढ़ाता है)
मन्थयति,	मन्थयते	(मथता है)
खादयति,	खादयते	(खिलाता है)
नादयति,	नादयते	(नाद कराता है)
वादयति,	वादयते	(बजवाता है)
वांछयति,	वांछयते	(वांछा कराता है)
वाहयति,	वाहयते	(वहाता है)
पातयति,	पातयते	(गिराता है)
नाथयति,	नाथयते	(मांगता है)
वन्दयति,	वन्दयते	(बन्दना करता है)
मोदयति,	मोदयते	(मोद कराता है)
बन्धयति,	बन्धयते	(बंधवाता है)
स्पन्दयति,	स्पन्दयते	(चलित कराता है)
बाधयति,	बाधयते	(बाधा दिलाता है)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

षष्ठः पाठः

(ततः प्रविशति शर्विलकः)

शर्विलकः—(नभोऽवलोक्य सहर्षं) अये, कथं अस्तं उपगच्छति भगवान् मृगांकः ? वृक्ष-वाटिकापरिसरे सन्धिं कृत्वा प्रविष्टोऽस्मि मध्यमकम् । तद् यावद् इदानीं चतुःशालकं अपि दूषयामि—

देशः को नु जलावसेकशिथिलो, यस्मिन् न शब्दो भवेत्
भित्तीनां च न दर्शनान्तरगतः सन्धिः करालो भवेत् ।
क्षारक्षीणतया च लोष्टककृशं जीर्णं क हर्म्यं भवेत्
कस्मिन् स्त्रीजनदर्शनं च न भवेत् स्यादर्थसिद्धिश्च मे ॥

(भित्तिं परामृश्य) नित्यादित्यदर्शनोदकसेचनेन दूषिता इयं भूमिः क्षारक्षीणा, मूषिकोत्करश्चेह । सिद्धोऽयमर्थः प्रथममेव । एतत् स्कन्धपुत्राणां सिद्धिलक्षणम् । अत्र कर्मप्रारम्भे कीदृशं इदानीं सन्धिमुत्पादयामि ? इह खलु भगवता कनकशक्तिना चतुर्विधः सन्ध्युपायो दर्शितः, तद्यथा—पक्वेष्टकानां आकर्षणं, आमेष्टकानां छेदनं, पिण्डमयानां सेचनं काष्ठमयानां पाटनमिति । तदत्र पक्वेष्टकानां आकर्षणम् ।

—मृच्छकटिक (शूद्रक)

[(तब शर्विलक प्रवेश करता है)

शर्विलक—(आकाश देख हर्ष के साथ) अरे, क्या, भगवान् चन्द्र अस्त हो रहे हैं । वृक्षवाटिका के समीप सेंध लगाकर बिचले खंड में घुसा हूँ । सो अब चौसार को भी तोड़ता हूँ—

कौनसा स्थान जल से भीगने से ढीला है, जिसमें (सेंध लगाते) शब्द नहीं होवे, भित्तियों के दीखने से सन्धि विकट न हो जाये ।

नोन्छा से क्षीण होने के कारण डलेके कृश होने से कहाँ महल जीर्ण होवे, कहाँ स्त्रीलोगों का दर्शन न होवे और मेरे प्रयोजन की सिद्धि भी होवे ।

(भीत को टटोल कर) सदा धूप में रहने और पानी से भीगने के कारण यह भूमि कमजोर और नोनछे से क्षीण है, चूहों का कूडा भी यहाँ है । यह काम (तो) पहले ही सिद्ध (हो गया) । स्कन्धपुत्रों (चोरों) की सिद्धि का यह

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लक्षण है। यहाँ काम आरम्भ करते अब कैसी सेंध बनाऊँ? यहाँ भगवान् कनकशक्ति (चौराचार्य) ने चार प्रकार के सेंध के तरीके दिखलाये हैं, जैसे— पकी ईंटों को खींचना (खिसकाना), कच्ची ईंटों का तोड़ना, लोंदों का भिगोना, काठकीका फाड़ना इति। सो यहाँ पकी ईंटों का खिसकाना (है)।]

नभः (आकाश) परिसरः (पास, समीप) मध्यमकः (बीच का खण्ड) दूषयामि (तोड़ता हूँ, दूषित करता हूँ) अवसेकः (सिंचन, भिगोना) सन्धिः (सेंध) करालः (विशाल) क्षारः (नोनछा) लोष्टकं (ढेला) हर्म्य (महल) उत्करः (कूडा) इष्टकाः (ईंटें) पिंडमयः (मिट्टी के पिंडोंकी बनी) पाटनं (फाड़ना)।

अदादिगण की सकर्मक, परस्मैपदी सेट् विद् (जानना) धातु—

लट्

वेत्ति	वित्तः	विदन्ति
वेत्सि	वित्थः	वित्थ
वेद्मि	विद्वः	विद्मः

विद् + त्ति = वेद् + त्ति = वेत्ति

लिट्

विवेद	विविदतुः	विविदुः
विवेदिथ	विविदथुः	विविद
विवेद, विविद	विविदिव	विविदिम

विदाञ्चकार, विदांबभूव, विदामास

लुट्

वेदिता	वेदितारौ	वेदितारः

लृट्

वेदिष्यति	वेदिष्यतः	वेदिष्यन्ति

लोट्

वेत्तु, वित्तात्	वित्तां	विदन्तु

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

विद्धि, वित्तात्	वित्तं	वित्त
वेदानि	वेदाव	वेदाम
विदाङ्करोतु	विदाङ्कुरुतां	विदाङ्कुर्वन्तु

वा (बहना) अनिट्, परस्मैपदी

लट्

वाति	वातः	वान्ति

लिट्

ववौ	ववतुः	ववुः

लृट्

वास्यति	वास्यतः	वास्यन्ति

लोट्

वातु, वातात्	वातां	वान्तु
वाहि, वातात्	वातं	वात
वानि	वाव	वाम

इसी तरह अनिट् धातु या (जाना), भा (प्रकाशना), स्ना (नहाना) ला (लाना) ख्या (कहना) और पा (रक्षण करना) के भी रूप होते हैं।

सप्तमः पाठः

जनको ह वैदेही बहुदक्षिणेन यज्ञेन ईजे। तत्र ह कुरु-पंचालानां ब्राह्मणा अभिसमेता बभूवुः। तस्य ह जनकस्य वैदेहस्य विजिज्ञासा बभूव—'कः स्विद् एषां ब्राह्मणानां अनूचानतम' इति। स ह गवां सहस्रं अवरुरोध, दश दश पादा एकैकस्याः शृङ्गयोः आबद्धा बभूवुः ॥१॥

तान् ह उवाच—'ब्राह्मणा भगवन्तः, यो वो ब्रह्मिष्ठः, स एता गा उदजतां' इति।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

ते ह ब्राह्मणा न दधृषुः। अथ ह याज्ञवल्क्यः स्वं एव ब्रह्मचारिणं उवाच—'एताः सौम्य, उदज सोमश्रवा-ा-ा' इति। ता ह उदांचकार। ते ह ब्राह्मणाः चुक्रुधुः—'कथं नो ब्रह्मिष्ठो ब्रवीति' इति।

अथ ह जनकस्य वैदेहस्य होता अश्वलो बभूव। स ह एनं पप्रच्छ—'त्वं नु खलु नो याज्ञवल्क्य, ब्रह्मिष्ठोऽसि ?' इति। स ह उवाच—'नमो वयं ब्रह्मिष्ठाय कुर्मः गोकामा वयं स्मः' इति। तं ह तत एव प्रष्टुं दध्रे होता अश्वलः ॥ २ ॥

—'याज्ञवल्क्य' इति ह उवाच (होता अश्वलः) 'यद् इदं सर्वं मृत्युना आप्तं, सर्वं मृत्युना न अभिपन्नं, केन यजमानो मृत्योः आप्तिं अतिमुच्यते' इति।

—बृहदारण्यक उपनिषद्, अध्याय ३

[विदेहवाले (राजा) जनक ने बहुत दक्षिणावाले यज्ञ से यजन किया। वहाँ (विदेह, मिथिला में) कुरु और पँचाल के ब्राह्मण इकट्ठा हुये थे। उस जनक वैदेह को जानने की इच्छा हुई—'इन ब्राह्मणों में कौन सा सबसे बड़ा विद्वान् है'। उसने हजार गौयें एकत्रित कर दीं, (जिनमें से) एक-एक की दोनों सींगों में दस-दस पाद (५-५ मासा सोना) बँधे हुए थे ॥ १ ॥

(जनक ने) उन (ब्राह्मणों) को कहा—'भगवान् ब्राह्मणो, जो आप सबमें सबसे अधिक वेदज्ञ हैं, वे इन गायों को हांक ले जांये'। उन ब्राह्मणों ने हिम्मत नहीं की। तब याज्ञवल्क्य ने अपने ही ब्रह्मचारी को कहा—'सौम्य सोमश्रवा, इनको हांक ले'। (उसने) उन्हें हांक लिया। वे (दूसरे) ब्राह्मण क्रुद्ध हो गये—'कैसे हम सबसे वेदज्ञतम (ब्रह्मिष्ठ) (अपने को) बतलाता है।'

अथ जनक वैदेह का होता (पुरोहित) अश्वल था। उसने इन (याज्ञवल्क्य) से पूछा—'याज्ञवल्क्य, तू हममें ब्रह्मिष्ठ है न ?' इति। उस (याज्ञवल्क्य) ने कहा—'हम ब्रह्मिष्ठ को नमस्कार करते हैं, हम (तो) गौओं की कामना रखते हैं।' इति। उस होता अश्वल ने वहीं से उसे प्रश्न करना आरम्भ किया ॥ २ ॥

—'याज्ञवल्क्य' ऐसा बोला, (होता अश्वल)—'जो कि यह सब मृत्यु द्वारा प्राप्त, मृत्यु से पकड़ा है, किस (उपाय) से यजमान मृत्यु की पकड़ से मुक्त होता है ?' इति।]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

वैदेह: (विदेह, तिरहुत का) वा, ह (जोर देने के अव्यय) ईजे (यजनकिया) कुरु, कुरव: (मेरठ के आसपास का कुरुदेश) पंचाला: (रुहेलखण्ड–कन्नौज प्रदेश) अभिसमेता: (एकत्रित) विजिज्ञासा (जानने की इच्छा) क: स्वित् (कौन सा) स्विद् (प्रश्नार्थ अव्यय) अनूचान: (विद्वान्, पढ़ा) अवरुरोध (रुँधवाया) पाद: (पांच मासा सोने का सिक्का, जो कि पूरे २० मासे या एक तोला आठ मासे वाले सुवर्ण का चौथाई होता था)। आबद्ध: (बँधा) उदजतां (हाँके) दधृषु: (हिम्मत की, लिट्) सौम्य (प्रिय) चुक्रुधु: (क्रुद्ध हुये, लिट्) ब्रह्म (वेद, ज्ञान) ब्रह्मिष्ठ: (सबसे बड़ा वेदज्ञ) होता (एक ऋत्विग्) नो (हमारेमेंका) स्म (हैं) प्रष्टुं (पूछनेको) दध्रे (पकड़ा, लिट्) आप्तं (व्याप्त) अभिपन्नं (पकड़ा) अतिमुच्यते (छोड़ा जाये)।

विद् (जानना) परस्मैपद

लङ् (पूर्व का अवशिष्ट)

	अवेत्	अवित्तां	अविदु:
	अवे:	अवित्तं	अवित्त
	अवेदं	अविद्व	अविद्म
लिङ् (विधि)	विद्यात्	विद्यातां	विद्यु:
	विद्या:	विद्यातं	विद्यात
	विद्यां	विद्याव	विद्याम
लिङ् (आशी:)	विद्यात्	विद्यास्तां	विद्यासु:
	विद्या:	विद्यास्तं	विद्यास्त
	विद्यासं	विद्यास्व	विद्यास्म
लुङ्	अवेदीत्	अवेदिष्टां	अवेदिषु:
लृङ्	अवेदिष्यत्	अवेदिष्यतां	अवेदिष्यन्

रुद् (रोना)

लट्	रोदिति	रुदत:	रुदन्ति
लिट्	रुरोद	रुरुदतु:	रुरुदु:
लुट्	रोदिता	रोदितारौ	रोदितार:
लृट्	रोदिष्यति	रोदिष्यत:	रोदिष्यन्ति

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लोट्	रोदितु, रुदतात्	रुदतां	रुदन्तु
	रोदिहि, रुदतात्	रुदतं	रुदत
लिङ् (विधि)	रुद्यात्	रुद्यातां	रुद्युः
लिङ् (आशीः)	रुद्यात्	रुद्यास्तां	रुद्यासुः
लुङ्	अरोदीत्	अरोदिष्टां	अरोदिषुः

श्वस् (सांस लेना)

लट्	श्वसिति	श्वसतः	श्वसन्ति

स्वप् (सोना) सेट्, परस्मैपदी

लट्	स्वपिति	स्वपतः	स्वपन्ति
लिट्	सुष्वाप	सुषुपतुः	सुषुपुः
लुङ्	अस्वाप्सीत्	अस्वाप्स्तां	अस्वाप्सुः
लृङ्	अस्वपिष्यत्	अस्वपिष्यतां	अस्वपिष्यन्

अष्टमः पाठः

शर्विलकः—नमो वरदाय कुमारकार्तिकाय। नमः कनकशक्तये ब्रह्मण्यदेवाय देवव्रताय। नमो भास्करनन्दिने। नमो योगाचार्याय, यस्याऽहं प्रथमः शिष्यः। तेन च परितुष्टेन योगरोचना मे दत्ता—

अनया हि समालब्धं न मां द्रक्ष्यन्ति रक्षिणः।
शस्त्रं च पतितं गात्रे रुजं नोत्पादयिष्यति॥

धिक् कष्टं, प्रमाणसूत्रं मे विस्मृतम्। (विचिन्त्य) आ, इदं यज्ञोपवीतं प्रमाणसूत्रं भविष्यति। यज्ञोपवीतं हि नाम ब्राह्मणस्य महद् उपकरणद्रव्यं, विशेषतोऽस्मद्विधस्य, कुतः—

एतेन मापयति भित्तिषु कर्ममार्गं, एतेन मोचयति भूषणसंप्रयोगात्।
उद्घाटको भवति यंत्रदृढे कपाटे, दष्टस्य कीटभुजगैः परिवेष्टनं च।

मापयित्वा कर्म समारभे। (तथा कृत्वाऽवलोक्य च) एकलोष्टावशेषोऽयं

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

सन्धिः । धिक् कष्टं (यज्ञोपवीतेन अङ्गुलिं बद्ध्वा विषवेगं नाटयति)। चिकित्सां कृत्वा स्वस्थोऽस्मि । (पुनः कर्म कृत्वा दृष्ट्वा च) अये ज्वलति प्रदीपः, तथा हि—

शिखा प्रदीपस्य सुवर्णपिंजरा, महीतले सन्धिमुखेन निर्गता ।
विभाति पर्यन्ततमस्समावृता, सुवर्णरेखेव कषे निवेशिता ।

(पुनः कर्म कृत्वा) समाप्तोऽयं सन्धिः । भवतु प्रविशामि । अथवा न तावत् प्रविशामि । प्रतिपुरुषं निवेशयामि । (तथा कृत्वा) अये, न कश्चित् । नमः कार्तिकेयाय । (प्रविश्य दृष्ट्वा च) अये, पुरुषद्वयं सुप्तम् । भवतु, आत्मरक्षार्थं द्वारं उद्घाटयामि । कथं जीर्णत्वाद् गृहस्य विरौति कपाटम् ? तद् यावद् सलिलं अन्वेषयामि । क नु खलु सलिलं भविष्यति ? (इतस्ततो दृष्ट्वा सलिलं गृहीत्वा क्षिपति सशंकं) मा तावत् भूमौ पतितं शब्दमुत्पादयेत । (काष्ठेन प्रतीक्ष्य कपाटं उद्घाट्य)। भवतु, एवं तावद् इदानीं परीक्षे । किं लक्ष्यसुप्तं उत परमार्थसुप्तं इदं द्वयम् ? (त्रासयित्वा परीक्ष्य च) अये, परमार्थसुप्तेन अनेन भवितव्यम् । (समन्ताद् अवलोक्य) अये कथं मृदंगः, अयं दर्दुरः, अयं पणवः, इयमपि वीणा, एते वंशाः, इमानि पुस्तकानि । किं नाट्याचार्यस्य गृहं इदम् ? अथवा भवनप्रत्ययात् प्रविष्टोऽस्मि, तत् किं परमार्थदरिद्रोऽयं उत राजभयात् चौरभयाद् वा भूमिस्थं द्रव्यम् । भवतु, बीजं प्रक्षिपामि । (तथा कृत्वा) निक्षिप्तं बीजं, न कचित् स्फारीभवति । अये, परमार्थदरिद्रोऽयम् । भवतु, गच्छामि ।

—मृच्छकटिक (शूद्रक)

[शर्विलक (चोर)—वरद कुमार कार्तिकेय के लिये नमस्कार । ब्राह्मणानुग्राहक देवव्रती देव कनकशक्ति को नमस्कार । भास्करनन्दी को नमस्कार । योगाचार्य को नमस्कार, जिसका कि मैं प्रथम शिष्य हूँ, उन्होंने सन्तुष्ट हो मुझे योगरोचना दी—

जिसे लगा लेने पर न मुझे पुलीसवाले देखेंगे,
शरीर पर पड़ा हथियार घाव नहीं उत्पादन करेगा ।

धिक् कष्टं, नापने का सूत ही मैं भूल आया । (सोच कर) आ, यह जनेऊ नापने का सूत होगा । जनेऊ तो ब्राह्मण का बहुत उपकारक द्रव्य है, खास कर

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

हमारे जैसे का। क्योंकि—इससे ही तो काम के मार्ग को नापता है, भूषण के जोड़ से इसके द्वारा छुड़ाता है। ताले से मजबूत किवाड़ में (यह) उघाड़क होता है और कीड़े या सांप से काटे का परिवेष्टन होता है।

नाप कर काम आरंभ करता हूँ। (वैसा करके और देख कर) एक डला भर बाकी रह गई है, यह सेंध। धिक् कष्टं, सांप से डँसा गया हूँ (जनेऊ से अंगुली बाँध कर विष के प्रभाव का अभिनय करता है)। चिकित्सा करके (अब) स्वस्थ हूँ। (फिर काम करके और देख कर) अये, दीपक जल रहा है, क्योंकि—

पीली प्रदीप की सोनेसी शिखा, भूतलपर सेंधके मुँह से निकली,
सब ओर अन्धकारसे घिरी कसौटी पर पड़ी सोनेकी रेखा सी चमक रही है।

(फिर काम करके) सेंध समाप्त हो गई। अच्छा, घुसता हूँ, अथवा नहीं घुसूँगा। प्रतिबिम्ब डालता हूँ। (वैसा करके) अये, कोई नहीं है। नमः कार्तिकेयाय। (घुस कर और देख कर) अये दो पुरुष सोये हैं। अच्छा, आत्मरक्षा के लिये द्वार खोलता हूँ। घरके पुराने होने के कारण किवाड़ आवाज करता है क्यों? तो पानी ढूँढ़ता हूँ। कहाँ पानी होगा? (इधर-उधर देख कर पानी लेकर डरता-डरता उसे डालता है) जमीन पर गिर कर आवाज न करे। (काठ से देख कर किवाड़ को उघाड़ कर) अच्छा, ऐसे अब परीक्षा करता हूँ। क्या ये दोनों नकली सोये हैं या सचमुच सोये हैं? (डराकर परीक्षा करके) अये, ये सचमुच सोये होने चाहिये। (चारों ओर देख कर) अये, क्या (यह) मृदंग है, यह दर्दुर, यह ढोलक, यह वीणा भी, ये बांसुरियां, ये पोथियां। क्या यह नाट्याचार्य का घर है? अथवा (विशाल) भवन का विश्वास करके घुसा हूँ, तो क्या यह सचमुच का दरिद्र है? या राजा के भय से चोर के भय से धरती (के भीतर) छिपा द्रव्य है? अच्छा, (चमत्कारिक) बीज डालता हूँ। (वैसा करके) डाला बीज कहीं फाड़कर बाहर नहीं आता है। अये, यह सचमुच का दरिद्र है। अच्छा जाता हूँ।]

आ (तर्क-वितर्क करने का अव्यय) द्रव्यं (वस्तु, धन) अस्मद्विधः (हमारे जैसा) मापयति (नापता है) कर्ममार्गः (काम का स्थान) प्रयोगः (जोड़) यन्त्रं (ताला) उद्घाटकः (उघाड़ने का साधन) भुजंगः (सांप) दष्टः (डंसा) परिवेष्टनं (लपेटा) विषवेगः (विष का जोर) पिंजरा (पीली)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

पर्यन्तः (छोरों पर) कषः (कसौटी का पत्थर) प्रतिपुरुषः (परछाई) तद् यावद् (सो) सलिलं (पानी) परमार्थः (सचमुच का) सुप्तः (सोया) लक्ष्यं (नकली) उत (या) भूमिस्थं (धरती में छिपाया) बीजं (धन बतलानेवाला बीज) स्फारं (फाड़ा)।

सन्-अन्त (सन्नन्त) इच्छा-सहित क्रिया के लिये आता है, धातु के अन्त में स् बढ़ा देने के कारण इसका सन्नन्त नाम पड़ा। भू + सन् (होने की इच्छा) जैसे :—

लट्	बुभूषति	बुभूषतः	बुभूषन्ति
	बुभूषसि	बुभूषथः	बुभूषथ
	बुभूषामि	बुभूषावः	बुभूषामः
लिट्	बुभूषाञ्चकार	बुभूषाञ्चक्रतुः	बुभूषाञ्चक्रुः
लुट्	बुभूषिता	बुभूषितारौ	बुभूषितारः
लृट्	बुभूषिष्यति	बुभूषिष्यतः	बुभूषिष्यन्ति
लोट्	बुभूषतु	बुभूषतां	बुभूषन्तु
लङ्	अबुभूषत्	अबुभूषतां	अबुभूषन्
लिङ् (विधि)	बुभूषेत्	बुभूषेतां	बुभूषेयुः
लिङ् (आशीः)	बुभूष्यात्	बुभूष्यास्तां	बुभूष्यासुः
लुङ्	अबुभूषीत्	अबुभूषिष्टां	अबुभूषिषुः
लृङ्	अबुभूषिष्यत्	अबुभूषिष्यतां	अबुभूषिष्यन्

ऐसे ही निम्न भी—

तितर्जिषति (तर्जना चाहता है)	पिपठिषति (पढ़ना चाहता है)
जुगुंजिषति (गूंजना०)	पिफलिषति (फलना०)
निनिन्दिषति (निन्दा०)	जिजीविषति (जीना०)
विव्रजिषति (जाना०)	रिरक्षिषति (रक्षा०)
निनदिषति (नाद करना०)	टिष्ठिविषति (थूकना०)
चुचुंबिषति (चूमना०)	चिस्खलिषति (गिरना०)
निनटिषति (नटन करना०)	आटिटिषति (अटन करना०)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

मिमंडिषति (मंडन करना०) जिजल्पिषति (बोलना०)
बिभणिषति (कहना०) पुफुल्लिषति (फूलना०)
चिकंपिषति (कांपना०) बुभूषिषति (भूषित करना०)

नवमः पाठः

विदूषकः—(उत्स्वप्नायते) भो वयस्य, सन्धिरिव दृश्यते, चौरमिव पश्यामि। तद् गृह्णातु भवान् इदं भांडम्।

शर्विलकः—किन्नु मां प्रविष्टं ज्ञात्वा ? तत् किं मारयामि ? अथवा उत्स्वप्नायते। (दृष्ट्वा) अये, पुराणशाटिकानिबद्धं सत्यमेव इदं अलङ्कारभांडं दीपप्रकाशेन उद्दीप्तम्। भवतु, गृह्णामि। अथवा न युक्तं तुल्यावस्थं कुलपुत्रजनं पीडयितुम्। तद् गच्छामि।

विदूषकः—भो वयस्य, शापितोऽसि गोब्राह्मणशपथेन, यदि एतत् सुवर्णभांडं न गृह्णासि।

शर्विलकः—अनतिक्रमणीयो गोब्राह्मणशपथः, तद् गृह्णामि। अथ ज्वलति प्रदीपः। अस्ति च मम समीपे प्रदीपनिर्वाणार्थम् आग्नेयः कीटः। तस्य अयं समयः। (कीटं मुञ्चति)। मया मुक्तेन कीटेन पक्षद्वयानिलेन निर्वापितो दीपः। धिक्, कृतं अन्धतमः। अथवा मयाऽपि ब्राह्मणकुले कृतं अन्धकारम्। अहं हि चतुर्वेदविदो ब्राह्मणस्य पुत्रः शर्विलको नाम, स च अहं गणिकामदनिकार्थं इदं करोमि। (इति जिघृक्षति)

विदूषकः—भो वयस्य, शीतलस्ते हस्तः।

शर्विलकः—धिक्, प्रमादः। सलिलसंपर्कात् शीतलो मे हस्तः। भवतु, कक्षायां हस्तं प्रक्षिपामि (इति वामहस्तं उष्णीकृत्य गृह्णाति)।

विदूषकः—गृहीतम् ?

शर्विलकः—अनतिक्रमणीयं इदं ब्राह्मणवचनं, तद् गृहीतम्।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE 2025-Grant

विदूषकः—इदानीं विक्रीतपण्यो वणिग् इव अहं सुखं स्वप्स्यामि ।
शर्विलकः—महाब्राह्मण, स्वपिहि वर्षशतम् । कष्टं, एवं मदनिकागणिकार्थं मया ब्राह्मणकुलं तमसि पातितम् । अथवा आत्मा पातितः । तद् यावद् मदनिकाया निष्क्रयणार्थं वसन्तसेनागृहं गच्छामि।

—मृच्छकटिक (शूद्रक)

[विदूषक—(सपनाता है) हे मित्र, सेंध सी दीखती है, चोर सा देखता हूँ। सो आप ले लें इस सोनेकी वस्तुको ।

शर्बिलक—क्या मुझे घुसा जान कर ? तो क्या मारूँ ? अथवा सपनाता है । (देखकर) अये, पुरानी साड़ीमें बँधी सचमुच ही यह आभूषण-वस्तु दीपके प्रकाशसे चमक रही है । अच्छा, लेता हूँ । अथवा अपनी-सी अवस्था में पड़े कुल-पुत्र आदमी को पीड़ा देना ठीक नहीं । सो चलता हूँ ।

विदूषक—हे मित्र, गौ-ब्राह्मणकी शपथ है तुझे, यदि इस सोनेकी वस्तुको नहीं लेता ।

शर्बिलक—गौ-ब्राह्मण की शपथ का अतिक्रमण नहीं किया जा सकता, सो लेता हूँ । पर दीप जल रहा है । मेरे पास दीप बुझाने के लिये अग्नि-कीट है । उसका यह समय है । (कीड़ा छोड़ देता है) । मेरे छोड़े कीड़े ने (अपने) दोनों पंखों की हवा से दीप बुझा दिया । धिक् घोर अंधकार कर दिया । अथवा मैंने भी ब्राह्मण-कुल में अन्धकार कर दिया । मैं जो चारो वेदों के ज्ञाता ब्राह्मण का पुत्र शर्बिलक नामक हूँ, सो मैं वेश्या मदनिका के लिये यह कर रहा हूँ । (इति लेना चाहता है) ।

विदूषक—हे मित्र, तेरा हाथ शीतल है ।

शर्बिलक—धिक्, भूल । पानी के सम्पर्क से मेरा हाथ शीतल है । अच्छा, कांख में हाथ को डालता हूँ । (इति बायें हाथ को गरम करके लेता है) ।

विदूषक—ले लिया ?

शर्बिलक—ब्राह्मण का यह वचन इनकार नहीं किया जा सकता, सो ले रहा हूँ।

विदूषक—अब सौदा बेंच लिये बनिये की तरह मैं सुख से सोऊँगा ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

शर्विलक—महाब्राह्मण, सोता रह सौ बरस तक। कष्टं, मदनिका गणिका के लिये मैंने ब्राह्मणों के कुल को ऐसे अन्धकार में गिरा दिया अथवा अपने को ही गिरा दिया। सो (अब) मदनिका की दासता-मुक्ति के लिये वसन्तसेना के घर चलूँ।]

अदादिगण की सकर्मक उभयपदी अनिट् ब्रू (कहना) धातु—

लट्	ब्रवीति	ब्रूतः	ब्रुवन्ति
	ब्रवीषि	ब्रूथः	ब्रूथ
	ब्रवीमि	ब्रूवः	ब्रूमः
लिट् (वच् होकर)	उवाच	ऊचतुः	ऊचुः
	उवचिथ	ऊचथुः	ऊच
	उवाच, उवच	ऊचिव	ऊचिम
लुट्	वक्ता	वक्तारौ	वक्तारः
लृट्	वक्ष्यति	वक्ष्यतः	वक्ष्यन्ति
लोट्	ब्रवीतु, ब्रूतात्	ब्रूतां	ब्रुवन्तु
	ब्रूहि, ,,	ब्रूतं	ब्रूत
	ब्रवाणि	ब्रवाव	ब्रवाम
लङ्	अब्रवीत्	अब्रूतां	अब्रुवन्
	अब्रवीः	अब्रूतं	अब्रूत
	अब्रवं	अब्रूव	अब्रूम
लिङ् (विधि)	ब्रूयात्	ब्रूयातां	ब्रूयुः
	ब्रूयाः	ब्रूयातं	ब्रूयात
	ब्रूयां	ब्रूयाव	ब्रूयाम
लिङ् (आशीः, वच्)	उच्यात्	उच्यास्तां	उच्यासुः
	उच्याः	उच्यास्तं	उच्यास्त
	उच्यासं	उच्यास्व	उच्यास्म
लुङ्	अवोचत्	अवोचतां	अवोचन्
	अवोचः	अवोचतं	अवोचत
	अवोचं	अवोचाव	अवोचाम
लृङ्	अवक्ष्यत्	अवक्ष्यतां	अवक्ष्यन्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

दशमः पाठः

तस्मिन् अतिरमणीये वसन्तकाले अवन्तिसुन्दरी नाम मानसार-नन्दिनी, तस्याः प्रियवयस्यया बालचंद्रिकया सह नगरोपान्ते रम्योद्याने विहारार्थं गता। तत्र कस्यचित् चूतपोतकस्य छायाशीतले अनङ्गं स्थापयामास। अथ गन्धकुसुमहरिद्रादिना नानाविधेन पूजाद्रव्यनिकरेण मनोभवं अर्चयन्ती रेमे। तत्र राजवाहनो रतिप्रतिकृतिं अवन्तिसुन्दरीं प्रष्टुकामोऽभूत्। काम इव वसन्तसहायः पुष्पोद्भवसहितो राजवाहनः तद् उपवनं जगाम। प्रविश्य च तत्र तत्र रसालतरुषु कोकिलकीरमधु-कराणां आलापं श्रावं श्रावं बभ्राम। विकसितेन्दीवरकह्लारकैरवराजीव-राजिषु केलिलोलकलहंसकलरवं शुश्राव। विमलशीतलसलिललितानि सरांसि च दर्शं दर्शं शनैः ललनासमीपं अवाप। बालचंद्रिकया 'निःशङ्कं इत आगम्यतां' इति हस्तसंज्ञया समाहूतः पुरुहूत इव राजवाहनः कृशोदर्या अवन्तिसुन्दर्या अन्तिके जगाम।

सा मालवेन्द्रकन्यका मूर्तिमन्तं मन्मथं इव तमवलोक्य मन्दमारु-तान्दोलितलतेव मदनावेशवती चकम्पे। ततः लज्जया कानि कान्यपि भावान्तराणि अकरोत्। "ललनाजनेषु नूनं एष घुणाक्षरन्यायेन निर्मितो, नो चेद् ब्रह्मा एवंविधनिर्माणनिपुणो यदि भवेत्, तर्हि एतादृशीं अन्या-मपि तरुणीं किन्न करोति ?" एवं सानुरागं विलोकयतो राजवाहनस्य समक्षं स्थातुं लज्जिता सा सखीजनेषु अन्तरितगात्रा आकुंचितलोचनाभ्यां राजवाहनं विलोकयन्ती अतिष्ठत्।

—दशकुमारचरित्र (दंडी)

[उस अतिरमणीय वसन्तकाल में अवन्तिसुन्दरी नामक मानसार-पुत्री अपनी प्रिय सखी बालचन्द्रिका के साथ नगर के छोर पर एक रमणीय उद्यान में विहार के लिये गई। वहाँ किसी छोटे आम की छाया की ठंडी में कामदेव को स्थापित किया। फिर गंध, फूल, हल्दी आदि नाना प्रकार के द्रव्य-समूह से कामदेव की पूजा करती खेलती रही। वहाँ (राजकुमार) राजवाहन को भी रति के प्रतिचित्र अवन्तिसुन्दरी को देखने की इच्छा हुई। वसन्त के साथ कामदेव की तरह पुष्पोद्भव के साथ राजवाहन उस उपवन में गये। प्रवेश कर वहाँ-वहाँ आम के वृक्षों

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

पर कोयल, तोता, भँवरों के आलापको सुनते घूमने लगे। फूले नील-रक्त-पीत-श्वेत कमलों की पांतियों में क्रीड़ा-लोभी हंसों के कलरव को सुनते रहे। विमल और शीतल जल से सुन्दर सरोवरों को देखते-देखते ललनाओं के समीप पहुँचे। बालचन्द्रिका द्वारा हाथ के इशारे से "निर्भय यहाँ आइये" यह (प्रकट करते) बुलाये गये इन्द्र से राजवाहन कृश-उदरवाली अवन्तिसुन्दरी के पास गये।

वह मालवराज की पुत्री साकार कामदेव से उन्हें देख मन्द हवा से चालित लता की तरह मदन के आवेश में आ काँप उठी। फिर लज्जा से कौन-कौन से दूसरे (हाव-) भाव प्रकट किये। "ललनाजनों में निश्चय ही यह घुणाक्षरन्याय से बनाई गई, नहीं तो यदि ब्रह्मा इस तरह के निर्माण में चतुर होता, तो ऐसी दूसरी भी तरुणी को क्यों नहीं बनाता ?" (यह सोचते) अनुराग के साथ देखते राजवाहन के सामने खड़ी रहने में असमर्थ हो वह सखीजनों की आड़ में शरीर किये सिकुड़ी आँखों से राजवाहन की ओर देखती खड़ी रही।]

नन्दिनी (पुत्री) नगरोपान्तं (उपनगर) चूतपोतः (तरुण आम) अनंगः (कामदेव) मनोभवः (कामदेव) निकरः (समूह) रेमे (रमण करती रही, लिट्) प्रतिकृतिः (नकल) रसालः (आम) कीरः (तोता) श्रावं श्रावं (सुनते सुनते) बभ्राम (भ्रमण करता रहा) इन्दीवरं (नील कमल) कह्लारं (लालकमल) कैरवं (पीतकमल) राजीवं (श्वेत कमल) राजिः (पांती) केलिः (क्रीड़ा) लोलः (लोभी) कलरवः (मधुर शब्द) दर्शं दर्शं (देखते देखते) अवाप (पहुँचा, लिट्) संज्ञा (संकेत) पुरुहूतः (इन्द्र) कृशोदरी (पतले उदरवाली) अन्तिके (समीप) मूर्तिमान् (साकार देहधारी) आन्दोलिता (चालिता) चकम्पे (कंप गई, लिट्) भावः (हाव-भाव) घुणाक्षरन्यायः (घुन के काटे में अक्षर के निकल आने की तरह आकस्मिक बात) निर्माण (रचना) अन्तरितः (छिपा) आकुञ्चितः (सिकुड़ा)।

ब्रू (कहना) आत्मनेपदी, लट्—

ब्रूते	ब्रुवाते	ब्रुवते
ब्रूषे	ब्रुवाथे	ब्रूध्वे
ब्रुवे	ब्रूवहे	ब्रूमहे

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लिट् (वच् के रूप में)

ऊचे	ऊचाते	ऊचिरे
ऊचिषे	ऊचाथे	ऊचिध्वे
ऊचे	ऊचिवहे	ऊचिमहे

लुट् (वच्)

वक्ता	वक्तारौ	वक्तारः
वक्तासे	वक्तासाथे	वक्ताध्वे
वक्ताहे	वक्तास्वहे	वक्तास्महे

लृट् (वच्)

वक्ष्यते	वक्ष्येते	वक्ष्यन्ते

लोट्

ब्रूतां	ब्रुवातां	ब्रुवताम्
ब्रूष्व	ब्रुवाथां	ब्रूध्वं
ब्रवै	ब्रवावहै	ब्रवामहै

लङ्

अब्रूत	अब्रुवातां	अब्रुवत
अब्रूथाः	अब्रुवाथां	अब्रूध्वं
अब्रुवि	अब्रूवहि	अब्रूमहि

लिङ् (विधि)

ब्रुवीत	ब्रुवीयातां	ब्रुवीरन्
ब्रुवीथाः	ब्रुवीयाथां	ब्रुवीध्वं
ब्रुवीय	ब्रुवीवहि	ब्रुवीमहि

लिङ् (आशीः, वच्)

वक्षीष्ट	वक्षीयास्तां	वक्षीरन्
वक्षीष्ठाः	वक्षीयास्थां	वक्षीध्वं
वक्षीय	वक्षीवहि	वक्षीमहि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लुङ् (वच्)

अवोचत	अवोचेतां	अवोचन्त
अवोचथाः	अवोचेथां	अवोचध्वं
अवोचे	अवोचावहि	अवोचामहि

लृङ् (वच्)

अवक्ष्यत	अवक्ष्येतां	अवक्ष्यन्त

एकादशः पाठः

सत्यकामो ह जाबालो जबालां मातरं आमंत्रयांचक्रे—'ब्रह्मचर्यं भवति, विवत्स्यामि, किं गोत्रोऽहमस्मि' इति ।

१. सा ह एनं उवाच—'नाहं वेद तात, यद्गोत्रस्त्वमसि, बहु अहं चरन्ती परिचारिणी यौवने त्वां अलभे । साऽहं एतत् न वेद, यद्गोत्रस्त्वमसि । जबाला तु नामाऽहं अस्मि, सत्यकामो नाम त्वमसि । स सत्यकाम एव जाबालो ब्रुवीथा' इति ।

२. स ह हारिद्रुमतं गौतमं एत्य उवाच—'ब्रह्मचर्यं भगवति वत्स्यामि, उपेयां भगवन्तं' इति ।

३. तं ह उवाच—"किं गोत्रो नु सोम्य, असि' इति । स ह उवाच—'न अहं एतद् वेद भो, यद्गोत्रोऽहं अस्मि । अपृच्छं मातरं, सा मा प्रत्यब्रवीत्—'बहु अहं चरन्ती परिचारिणी यौवने त्वां अलभे, साऽहं एतत् न वेद, यद्गोत्रस्त्वमसि, जबाला नामाऽहं अस्मि, सत्यकामो नाम त्वमसि' इति सोऽहं सत्यकामो जाबालोऽस्मि भो" इति ।

४. तं ह उवाच—'न एतद् अब्राह्मणो विवक्तुं अर्हति । समिधं सोम्य, आहर, उप त्वं नेष्ये, न सत्याद् अगा' इति ।

(छान्दोग्य उपनिषद् अध्याय ४, खंड ४)

[सत्यकाम जाबाल ने (अपनी) माँ जबाला को संबोधित किया—'भवती (आप), ब्रह्मचर्य वास करना चाहता हूँ, मैं कौन गोत्र का हूँ ?' इति ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

१. उसने इसे कहा—'मैं नहीं जानती तात, जिस गोत्र का तू है। बहुत घूमती सेवकाई करती जवानी में मैंने तुझे प्राप्त किया। सो मैं यह नहीं जानती, जिस गोत्र का तू है। जबाला नामक मैं हूँ, सत्यकाम नामक तू है। सो सत्यकाम जाबाल ही तू कहना' इति।

२. वह (सत्यकाम) हारिद्रुमत् गौतम के पास जाकर बोला—'भगवान् के पास ब्रह्मचर्यं वसना चाहता हूँ, भगवान् के पास उपनीत होऊँ' इति।

३. उसे (गौतम) ने कहा—'कौन गोत्रका सोम्य, तू है ?' इति। उस (सत्यकाम) ने कहा—'यह मैं नहीं जानता भो, जिस गोत्र का मैं हूँ। माँ से पूछा। उसने जवाब दिया—'बहुत घूमती सेवकाई करती जवानी में मैंने तुझे प्राप्त किया। सो मैं यह नहीं जानती, जिस गोत्र का तू है, जबाला नामक मैं हूँ, सो मैं सत्यकाम जाबाल हूँ, भो' इति।

४. उसको (गौतम ने) कहा—'यह अब्राह्मण नहीं कह सकता। समिधा ला सोम्य, तुझे उपनीत करूँगा। तू सत्य से नहीं विचलित हुआ।']

आमंत्रयांचक्रे (संबोधित किया) विवत्स्यामि (वसना चाहता हूँ) अलभे (मैंने पाया) वेद (जानती हूँ) ब्रुवीथाः (बोलना, विधि-अर्थ) एत्य (आकर) उपेयां (पास आऊँ) सोम्य (प्रिय) भो (हे, सम्मानपूर्वक) प्रत्यब्रवीत् (उत्तर दिया) विवक्तुम् (बोलने को) अर्हति (सकता) अगाः (तू हटा) उप त्वं नेष्ये (उपनयन करूँगा, छान्दस प्रयोग में उपसर्ग धातु से दूर भी हो सकता है)।

यङन्त—धातु के अर्थ में अधिकता को जोड़नेवाला प्रत्यय है। भवति = होता है, बोभूयते = बहुत होता है। इसके रूप हैं—

लट्	बोभूयते	बोभूयेते	बोभूयन्ते
लिट्	बोभूयांचक्रे	बोभूयांचक्राते	बोभूयांचक्रिरे
लुट्	बोभूयिता	बोभूयितारौ	बोभूयितारः
लृट्	बोभूयिष्यते	बोभूयिष्येते	बोभूयिष्यन्ते
लोट्	बोभूयतां	बोभूयेतां	बोभूयन्तां
लङ्	अबोभूयत	अबोभूयेतां	अबोभूयन्त

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लिङ् (विधि)	बोभूयेत	बोभूयेतां	बोभूयेरन्
लिङ् (आशीः)	बोभूयिषीष्ट	बोभूयिषीयास्तां	बोभूयिषीरन्
लुङ्	अबोभूयिष्ट	अबोभूयिषातां	अबोभूयिषत
लृङ्	अबोभूयिष्यत	अबोभूयिष्येतां	अबोभूयिष्यन्त

द्वादशः पाठः

रदनिका—(गत्वा सत्रासं) हा धिक्, हा धिक्, अस्माकं गृहे सन्धिं कर्तयित्वा चौरो निष्क्रामति। भवतु, मैत्रेयं गत्वा प्रबोधयामि। (गत्वा) आर्य, मैत्रेय, उत्तिष्ठ उत्तिष्ठ। अस्माकं गृहे सन्धिं कर्तयित्वा चौरो निष्क्रान्तः।

विदूषकः—(उत्थाय) आः, दास्याः पुत्रिके, किं भणसि चौरं कर्तयित्वा सन्धिः निष्क्रान्तः ?

रदनिका—हताश, अलं परिहासेन, किं न प्रेक्षसे एतत् ?

विदूषकः—दास्याः पुत्रिके, किं भणसि, द्वितीयमिव द्वारं उद्घाटितमिति। भो वयस्य चारुदत्त ! उत्तिष्ठ उत्तिष्ठ, अस्माकं गेहे सन्धिं दत्वा चौरो निष्क्रान्तः।

चारुदत्तः—भवतु, भो, अलं परिहासेन।

विदूषकः—भो, न परिहासः, प्रेक्षतां भवान्।

चारुदत्तः—कस्मिन् उद्देशे ?

विदूषकः—भो, एषः। —मृच्छकटिक (शूद्रक)

[**रदनिका**—(जाकर डरके साथ) हा धिक्, हा धिक्, हमारे घर में सेंध काट कर चोर निकल गया। अच्छा, मैत्रेय को जाकर जगाऊँगी। (जाकर) आर्य मैत्रेय, उठ उठ। हमारे घर में सेंध काटकर चोर निकल गया।

विदूषक—(उठ कर) आः दासी-पुत्री, क्या कहती है, चोर को काट कर सेंध निकल गई ?

रदनिका—हताश, रहने दो परिहास। क्या नहीं देखते यह ?

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

विदूषक—दासी-पुत्री, क्या कहती है, (यह तो) दूसरा द्वार उघाड़ दिया है।
हे मित्र, चारुदत्त, उठ उठ, हमारे घर में सेंध देकर चोर निकल गया।
चारुदत्त—भो, रहने दो परिहास।
विदूषक—भो, परिहास नहीं, आप देखें।
चारुदत्त—किस जगह ?
विदूषक—भो, यह।]

अदादिगण, सकर्मक, परस्मैपदी अस् (होना) धातु—

लट्	अस्ति	स्तः	सन्ति
	असि	स्थः	स्थ
	अस्मि	स्वः	स्मः
लट् (भू)	बभूव	बभूवतुः	बभूवुः
लुट् (भू)	भविता	भवितारौ	भवितारः
लृट् (भू)	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्यन्ति
लोट्	अस्तु, स्तात्	स्तां	सन्तु
	एधि, स्तात्	स्तं	स्त
	असानि	असाव	असाम
लङ्	आसीत्	आस्तां	आसन्
	आसीः	आस्तं	आस्त
	आसं	आस्व	आस्म
लिङ् (विधि)	स्यात्	स्यातां	स्युः
	स्याः	स्यातं	स्यात
	स्यां	स्याव	स्याम
लिङ् (आशीः)	भूयात्	भूयास्तां	भूयासुः
लुङ् (भू)	अभूत्	अभूतां	अभूवन्
लृङ् (भू)	अभविष्यत्	अभविष्यतां	अभविष्यन्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

त्रयोदशः पाठः

चारुदत्तः—(विलोक्य) अहो, दर्शनीयोऽयं सन्धिः, कथं अस्मिन् अपि कर्मणि कुशलता ?

विदूषकः—भो वयस्य, एष सन्धिर्द्वाभ्यामेव दत्तो भवेत्, आगन्तुकेन अथवा शिक्षितुकामेन । अन्यथा अत्र उज्जयिन्यां कोऽस्माकं गृहविभवं न जानाति ?

चारुदत्तः—ततः सुहृद्भ्यः किं असौ कथयिष्यति तपस्वी ? 'सार्थवाह-सुतस्य गृहं प्रविश्य न किंचित् मया लब्धं' इति ।

विदूषकः—भोः, कथं तमेव चौरहतकमेव अनुशोचसि ? तेन चिन्तितं, महद् एतद् गृहं, इतो रत्नभांडं सुवर्णभांडं वा निष्क्रामयिष्यामि इति । (स्मृत्वा आत्मगतं) कुत्र तत् सुवर्णभांडम् ? (अनुस्मृत्य प्रकाशं) भो वयस्य, त्वं सर्वकालं भणसि, मूर्खो मैत्रेयः, अपंडितो मैत्रेय इति । सुष्ठु मया कृतं तत् सुवर्णभांडं भवतो हस्ते समर्पयता, अन्यथा दास्याः पुत्रेण अपहृतं भवेत् ।

—मृच्छकटिक (शूद्रक)

चारुदत्त—(देख कर) अहो, दर्शनीय है यह सेंध । क्या इस काम में भी कौशल (होता है) ।

विदूषक—हे मित्र, यह सेंध दो में से एक ने दी होगी, नवागंतुक ने अथवा सीखने की इच्छावाले ने । नहीं तो यहाँ उज्जैन में कौन हमारे गृह के वैभव को नहीं जानता ?

चारुदत्त—तो मित्रों से वह बेचारा क्या कहेगा ? 'सार्थवाह के पुत्र के घर में घुस कर मुझे कुछ नहीं हाथ लगा' इति ।

विदूषक—भो, क्यों उस चोट्टे के लिये ही शोच करते हो ? उसने समझा होगा, यह महान् घर है, यहाँ से रत्न की वस्तु या सुवर्ण की वस्तु निकालूँगा । (याद करके अपने से) कहाँ है वह सुवर्ण-भांड ? (याद करके प्रकट) हे मित्र, तुम सब समय कहते हो, 'मूर्ख है मैत्रेय, अ-पण्डित है मैत्रेय' इति । उस सुवर्ण-भांड को आपके हाथ में समर्पित करते अच्छा किया, नहीं तो दासीपुत्र ने चुरा लिया होता]।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Gran

आगन्तुकः (नवागत) शिक्षितुकामः (सीखनेवाला, अपरेंटिस) विभवः (संपत्ति) तपस्वी (बेचारा) सार्थवाहः (कारवांवाला महासेठ) भांडं (कोश, भांडा) चौरहतकः (चोट्टा) निष्क्रामयिष्यामि (निकालूँगा)।

यङ्-लुक्—यङन्त की तरह इसका भी प्रयोजन धातु के अर्थ में अतिशय लाना है। भू (होना) का परस्मैपदी रूप इस प्रकार होता है—

लट्	बोभवीति	बोभूतः	बोभुवति
	बोभवसि	बोभूथः	बोभूथ
	बोभवामि	बोभूवः	बोभूमः
लिट्	बोभवांचकार	बोभवांचक्रतुः	बोभवांचक्रुः
लुट्	बोभविता	बोभवितारौ	बोभवितारः
लृट्	बोभविष्यति	बोभविष्यतः	बोभविष्यन्ति
लोट्	बोभवीतु,बोभूतात्	बोभवीतां	बोभवन्तु
	बोभूहि, बोभूतात्	बोभूतं	बोभूत
	बोभवानि	बोभवाव	बोभवाम
लङ्	अबोभोत्	अबोभूतां	अबोभवुः
	अबोभोः	अबोभूतं	अबोभूत
	अबोभवं	अबोभवाव	अबोभवाम
लिङ् (विधि)	बोभूयात्	बोभूयातां	बोभयुः
	बोभूयाः	बोभूयातं	बोभूयात
	बोभूयां	बोभूयाव	बोभूयाम
लिङ् (आशीः)	बोभूयात्	बोभूयास्तां	बोभूयासुः
लुङ्	अबोभूवीत्	अबोभूतां	अबोभूवुः
	अबोभूवीः	अबोभूतं	अबोभूत
	अबोभूवं	अबोभूव	अबोभूम
लृङ्	अबोभविष्यत्	अबोभविष्यतां	अबोभविष्यन्

इसी तरह नीचे के धातु भी :—

धातु	लट् (यङ्लुक्)	अर्थ
पठ् (पढ़ना)	पापठीति	अतिशय पढ़ता है।
गद् (बोलना)	जागदीति	„ बोलता है।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लप् (बोलना)	लालपीति	अतिशय बोलता है ।
फल् (फलना)	पाफलीति	,, फलता है ।
नट् (नाचना)	नानटीति	,, नाचता है ।
व्रज् (जाना)	वाव्रजीति	,, जाता है ।
वद् (बोलना)	वावदीति	,, बोलता है ।
नद् (नाद करना)	नानदीति	,, नाद करता है ।
अट् (घूमना)	आटीति	,, घूमता है ।
खाद् (खाना)	चाखदीति	,, खाता है ।
स्वद् (चखना)	सास्वदीति	,, चखता है ।
स्वप् (सोना)	सास्वपीति	,, सोता है ।
रम् (रमना)	रारमीति	,, रमता है ।
लभ् (पाना)	लालभीति	,, पाता है ।

पठ् + यङ्लुक् + ति = पठ् + पठ् + ई + ति = पा + पठ् + ई + ति = पापठीति ।

चतुर्दशः पाठः

चारुदत्तः—अलं, परिहासेन ।

विदूषकः—भो, यथा नाम अहं मूर्खः, तत् किं परिहासेऽपि देश-कालं न जानामि ?

चारुदत्तः—कस्यां वेलायाम् ?

विदूषकः—यदा त्वं मया भणितः "शीतलस्ते हस्त" इति, तदैव ।

चारुदत्तः—कदाचिद् एवमपि स्यात । (सर्वतो निरूप्य सहर्षं) वयस्य, दिष्ट्या ते प्रियं निवेदयामि ।

विदूषकः—किं न अपहृतम् ?

चारुदत्तः—हृतम् ।

विदूषकः—तथाऽपि किं प्रियम् ?

चारुदत्तः—यद् एष कृतार्थो गतः ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE 2025-Grant

विदूषकः—न्यासः खलु सः।

चारुदत्तः—कथं न्यासः! (मोहं उपगतः)

विदूषकः—समाश्वसितु भवान्, यदि न्यासः चौरेण अपहृतः, त्वं किमथ मोहं उपगतः ?

चारुदत्तः—(समाश्वस्य) वयस्य,

कः श्रद्धास्यति भूतार्थं सर्वो मां तूलयिष्यति।
शंकनीया हि लोकेऽस्मिन् निष्प्रतापा दरिद्रता॥

विदूषकः—अहं खलु अपलपिष्यामि—"केन दत्तं केन गृहीतं, को वा साक्षी" इति।

चारुदत्तः—अहं इदानीं अनृतं अभिधास्ये ?

रदनिका—तद् यावद् आर्याधूतायै निवेदयामि (इति निष्कान्ता)।

वधूः—(ससंभ्रमं) अयि, सत्यं अपरिक्षतशरीर आर्यपुत्र आर्यमैत्रेयेण सह ?

चेटी—स्वामिनी, सत्यं, किन्तु यो वेश्याजनस्य अलंकारः स अपहृतः ?
(वधूर्मोहं नाटयति)

चेटी—समाश्वसितु आर्यधूता।

वधूः—(समाश्वस्य) चेटि, किं भणसि ? 'अपरिक्षतशरीर आर्यपुत्र' इति। वरं शरीरेण परिक्षतः, न पुनश्चारित्रेण। सांप्रतं उज्जयिन्यां जन एवं मंत्रयिष्यति—'दरिद्रतया आर्यपुत्रेणैव ईदृशं कार्यं अनुष्ठितम्'। भगवन् कृतान्त, पुष्करपत्रचंचलैः क्रीडसि दरिद्रपुरुषभागधेयैः ? इयं च मे एका मातृगृहलब्धा रत्नावली तिष्ठति। एतामपि अतिशौंडीरतया आर्यपुत्रो न ग्रहीष्यति। चेटि, आर्यमैत्रेयं तावत् आह्वय।

—मृच्छकटिक (शूद्रक)

[चारुदत्त—रहने दो परिहास।

विदूषक—भो, नाम के अनुसार मैं मूर्ख हूँ, पर क्या परिहास में भी मैं देश-काल नहीं जानता ?

चारुदत्त—किस समय (मुझे दिया) ?

विदूषक—जब तुम्हें मैंने कहा था—"तुम्हारा हाथ शीतल है" तभी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

चारुदत्त—कदाचिद् ऐसा ही हो। (चारो ओर देखकर हर्ष के साथ) मित्र, अहो, तुझे खुशखबरी सुनाता हूँ।

विदूषक—क्या नहीं चुराया ?

चारुदत्त—चुराया।

विदूषक—तो फिर क्या खुशखबरी ?

चारुदत्त—जो कि वह कृतार्थ हो कर गया।

विदूषक—वह धरोहर थी।

चारुदत्त—क्या धरोहर ? (मूर्छा को प्राप्त हुआ)

विदूषक—धीरज करें आप। यदि धरोहर को चोर ले गया, तो तुम क्यों मोह को प्राप्त हो रहे हो ?

चारुदत्त—(धीरज धरकर) मित्र,

"कौन सच्ची बात पर विश्वास करेगा, सभी मुझे हलका करेंगे।
इस दुनियाँ में प्रतापहीन (यह) दरिद्रता सन्देहास्पद होती है।"

विदूषक—मैं इन्कार करूँगा—"किसने दिया, किसने लिया, या कौन गवाह है।" इति।

चारुदत्त—मैं अब झूठ बोलूँगा ?

रदनिका—तो (यह बात) आर्या धूता को निवेदित करती हूँ (इति चली गई)।

बहू—(घबराहट के साथ) अरी सचमुच आर्य मैत्रेय के साथ आर्यपुत्र अक्षत-शरीर हैं ?

दासी—स्वामिनी, सच। जो वेश्या-जन का अलंकार था, वह चोरी चला गया।

(बहू मूर्च्छा का अभिनय करती है)

दासी—धीरज धरें आर्या धूता।

बहू—(धीरज धरकर) चेटि, क्या कहती है, "आर्यपुत्र अक्षत-शरीर हैं" इति। शरीर से क्षत होना ठीक पर आचरण से नहीं। अब उज्जैन में लोग यही सोचेंगे—"दरिद्रता के कारण आर्यपुत्र ने ही ऐसा काम किया"। भगवान् भाग्यदेवता, पीपल के पत्र जिमि चंचल दरिद्र पुरुषों के भाग्य से खेल करते हो ? और मेरे मातृगृह से प्राप्त यह एक रत्नमाला रह गई है। इसे भी आर्यपुत्र (अपनी) उदार-हृदयता के कारण नहीं ग्रहण करेंगे। चेटि! आर्यमैत्रेय को बुला ला।]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

जुहोत्यादिगण—इस समूहके धातुओंके रूप जुहोति (हु) धातुके रूपकी तरह चलते हैं। जुहोतिके लट् (वर्तमान) के रूप हैं—

जुहोति	जुहुतः	जुह्वति
जुहोषि	जुहुथः	जुहुथ
जुहोमि	जुहुवः	जुहुमः

शेष रूप भृ (भरण करना) की तरह, जैसे—

लट्	भरति	भरतः	भरन्ति
	भरसि	भरथः	भरथ
	भरामि	भरावः	भरामः
लिट्	बभार	बभ्रतुः	बभ्रुः
	बभर्थ	बभ्रथुः	बभ्र
	बभार	बभृव	बभृम
लुट्	भर्ता	भर्तारौ	भर्तारः
लृट्	भरिष्यति	भरिष्यतः	भरिष्यन्ति
लोट्	भरतु, भरतात्	भरतां	भरंतु
	भर, ,,	भरतं	भरत
	भराणि	भराव	भराम
लङ्	अभरत्	अभरतां	अभरन्
लिङ् (विधि)	भरेत्	भरेतां	भरेयुः
	भरेः	भरेतं	भरेत
	भरेयं	भरेव	भरेम
लिङ् (आशीः)	भ्रियात्	भ्रियास्तां	भ्रियासुः
लुङ्	अभार्षीत्	अभार्ष्टां	अभार्षुः
	अभार्षीः	अभार्ष्टं	अभार्ष्ट
	अभार्षं	अभार्ष्व	अभार्ष्म
लृङ्	अभरिष्यत्	अभरिष्यतां	अभरिष्यन्

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

भी (भय करना) अकर्मक, परस्मैपदी, अनिट्—

लट्	बिभेति	बिभितः	बिभ्यति
लिट्	बिभयाञ्चकार	बिभयाञ्चक्रतुः	बिभयाञ्चक्रुः
लुट्	भेता	भेतारौ	भेतारः
लृट्	भेष्यति	भेष्यतः	भेष्यन्ति
लोट्	बिभेतु	बिभीतां	बिभ्यतु
	बिभेहि	बिभीतं	बिभीत
	बिभयानि	बिभयाव	बिभयाम
लङ्	अबिभेत्	अबिभीतां	अबिभयुः
लिङ् (विधि)	बिभीयात्	बिभीयातां	बिभीयुः
लिङ् (आशीः)	भीयात्	भीयास्तां	भीयासुः
लुङ्	अभैषीत्	अभैष्टां	अभैषुः
लृङ्	अभेष्यत्	अभेष्यतां	अभेष्यन्

ह्री (लजाना) जिह्रेति (लजाता है) हा (छोड़ना) जहाति (छोड़ता है)।

धा (धारना)—

लट्	दधाति	धत्तः	दधति

हू (बुलाना) धातुके अन्य रूप इस गणकी और धातुओंकी तरह होते हैं—

णिजन्त (प्रेरणार्थक)	हावयति	हावयतः	हावयन्ति (छुड़वाते हैं)
सन्नन्त (इच्छायुक्त)	जुहूषति	जुहूषतः	जुहूषन्ति
यङन्त (अतिशयार्थ)	जोहूयते	जोहूये	जोहूयन्ते
यङ्लुक्	जोहोति	जोहूतः	जोहुवति

हा (छोड़ना के) सामान्य रूप—

लट्	जहाति	जहितः, जहीतः	जहति
लिट्	जहाञ्चकार	जहाञ्चक्रतुः	जहाञ्चक्रुः
लुट्	हाता	हातारौ	हातारः
लृट्	हास्यति	हास्यतः	हास्यन्ति
लोट्	जहातु	जहितां	जहतु
लङ्	अजहात्	अजहितां	अजहुः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लिङ् (विधि)	जह्यात्	जह्यातां	जह्युः
लिङ् (आशीः)	हेयात्	हेयास्तां	हेयासुः
लुङ्	अहासीत्	अहासिष्टां	अहासिषुः
लृङ्	अहास्यत्	अहास्यतां	अहास्यन्
सन्नन्त (लट्)	जिहासति	जिहासतः	जिहासन्ति
णिजन्त ,,	हापयति	हापयतः	हापयन्ति
यङन्त ,,	जेहीयते	जेहीयेते	जेहीयन्ते
यङ्लुगन्त ,,	जाहीति	जाहितः	जाहियति

दा (देना) परस्मैपदी, सकर्मक, अनिट् धातु के रूप—

लट्	ददाति	दत्तः	ददति
लिट्	ददौ	ददतुः	ददुः
लुट्	दाता	दातारौ	दातारः
लृट्	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
लोट्	ददातु	दत्तां	ददतु
लङ्	अददात्	अदत्तां	अददुः
लिङ् (विधि)	दद्यात्	दद्यातां	दद्युः
लिङ् (आशीः)	देयात्	देयास्तां	देयासुः
लुङ्	अदात्	अदातां	अदुः
लृङ्	अदास्यत्	अदास्यतां	अदास्यन्
सन्नन्त (लट्)	दित्सति	दित्सतः	दित्सन्ति
णिजन्त ,,	दापयति	दापयतः	दापयन्ति
यङन्त ,,	देदीयते	देदीयेते	देदीयन्ते
यङ्लुगन्त ,,	दादीति	दादितः	दादियति

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

पञ्चदशः पाठः

जानश्रुतिः ह पौत्रायणः श्रद्धादेयो बहुदायी बहुपाक्य आस। स ह सर्वत आवसथान् मापयांचक्रे—'सर्वत एव मे अत्स्यन्ति' इति।

अथ ह हंसा निशायां अतिपेतुः। तद् ह एवं हंसो हंसं अभ्युवाद— 'हो हो हि भल्लाक्ष भल्लाक्ष, जानश्रुतेः पौत्रायणस्य समं दिवा ज्योतिः आततं, तत् मा प्रसांक्षीः, तत् त्वा मा धाक्षीः' इति ॥ २ ॥

तं उ ह परः प्रत्युवाच—'कंबर, एनं एतत् सन्तं सयुग्वानं इव रैक्वं आत्थ ?'

—'यो नु कथं सयुग्वा रैक्व' इति ॥ ३ ॥

—'यथा कृताय विजिताय अधरेया संयन्ति इव एनं सर्वं तद् अभिसमेति, यत् किंच प्रजाः साधु कुर्वन्ति, यः तद् वेद, यत् स वेद, स मया एतदुक्त' इति ॥ ४ ॥

यद् उ ह जानश्रुतिः पौत्रायण उपशुश्राव। स ह संजिहान एव क्षत्तारं उवाच—'अंग अरे, ह सयुग्वानं इव रैक्वं आत्थ' ?

—'यो नु कथं सयुग्वा रैक्व' इति ॥ ५ ॥

'यथा कृताय विजिताय अधरेयाः संयन्ति, एवं' ॥ ६ ॥

स ह क्षत्ता अन्विष्य 'न अविदं' इति प्रत्येयाय तं ह उवाच।

—'यत्र अरे, ब्राह्मणस्य अन्वेषणा, तद् एनं अर्छ' इति ॥ ७ ॥

सोऽधस्तात् शकटस्य पामानं कषमाणं उपोपविवेश। तं ह अभ्युवाद—'त्वं नु भगवः, सयुग्वा रैक्व' इति।

—'अहं हि अरे' इति ह प्रतिजज्ञे।

स ह क्षत्ता 'अविदं' इति प्रत्येयाय ॥ ८ ॥

तद् उ ह जानश्रुतिः पौत्रायणः षट् शतानि गवां निष्कं अश्वतरीरथं, तद् आदाय प्रतिचक्रमे। तं ह अभ्युवाद ॥ १ ॥

—'रैक्व इमानि षट् शतानि गवां, अयं निष्कः, अयं अश्वतरीरथः, अनु मे एतां भगवः, देवतां शाधि, यां देवतां उपास्से' इति ॥ २ ॥

तं उ ह परः प्रत्युवाच—'आ जहार एताः शूद्र, तव एव सह गोभिः अस्तु' इति।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

तद् उ ह पुनः एव जानश्रुतिः पौत्रायणः सहस्रं गवां निष्कं अश्वतरीरथं दुहितरं तद् षट् आदाय प्रतिचक्रमे ॥ ३ ॥

तं ह अभ्युवाद—'रैक्व, इदं सहस्रं गवां, अयं निष्कः, अयं अश्वतरीरथः, इयं जाया, अयं ग्रामः, यस्मिन् आस्से। अनु एव मा भगवः शाधि' इति ॥ ४ ॥

तस्या ह मुखं उपोद्गृह्णन् उवाच—'आजहार इमाः शूद्र, अनेनैव मुखेन आलापीय' इति। (छान्दोग्य, अध्याय ४, खंड १–२)

[जानश्रुति पौत्रायण (राजा) श्रद्धा के दानोंवाला बहुत भोज देनेवाला था। उसने सर्वत्र अतिथिशालायें बनवाई थीं, 'सर्वत्र से (आकर) मेरा ही (भोजन लोग) खायेंगे' इति।

तब रात के (समय) हंस उड़े जा रहे थे। तब एक हंस ने (दूसरे) हंस से कहा—'हो हो भल्लाक्ष भल्लाक्ष, जानश्रुति पौत्रायण की ज्योति (प्रताप) दिन की ज्योति के समान फैली हुई है। सो मत पड़ना, वह तुझे जला न दे।' इति।

उसे दूसरे ने उत्तर दिया—'कंवर, इसको ऐसा होते सयुग्वा रैक्व जैसा तू कह रहा है।'

—'वह भला कैसा सयुग्वा रैक्व है' इति।

—'जैसे किये (अपने) राज्य के पास निचले जाते हैं, वैसे ही (वह) सब उसके पास जाते हैं, जो कुछ कि प्रजा अच्छा करती हैं, जो कि उसको जानता है, जिसको वह जानता है, सो मैंने यह कहा।' इति ॥ ४ ॥

(जिस (बात) को जानश्रुति पौत्रायण ने ऊपर से सुन लिया। उसने भोर को (अपने) सचिव से कहा—'भई अरे, सयुग्वा रैक्व सा बतलाओ ?'

—'जो कैसा सयुग्वा रैक्व है' ? ॥ ५ ॥

—'जैसे किये राज्य (वैसा) रैक्व है' ॥ ६ ॥

वह क्षत्ता लौट कर ढूंढकर 'मैंने नहीं पाया' यह उससे कहा।

—'अरे, जहाँ ब्राह्मण की खोज (होती) वहाँ उसे पा' इति ॥ ७ ॥

वह गाड़ी के नीचे दाद खुजलाते (आदमी) के पास बैठा और उससे बोला—'भगवन्, तू है सयुग्वा रैक्व ?' इति।

—'मैं ही (हूँ) रे।' इति हंकार भरी।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

वह क्षत्ता 'मिल गया' यह (सोच) लौट आया ॥ ८ ॥

तब जानश्रुति पौत्रायण छ सौ गायें, निष्क (सोना), एक खचरीका रथ लेकर गया और उससे बोला—'रैक्व, ये छ सौ गायें हैं, यह निष्क और खचरी-रथ है। भगवन् इस देवताकी मुझे शिक्षा दो, जिसे तू उपासता है।'

उसे परलेने जवाब दिया—'हटा ले जा इन्हें शूद्र, तेरा ही गायोंके साथ (यह सब) हो।' इति।

तब फिर जानश्रुति पौत्रायण हजार गायें, निष्क, खचरीरथ और कन्या लेकर गया। (और) उससे बोला—'रैक्व, यह हजार गायें यह निष्क, यह खचरीरथ, यह स्त्री, यह गांव, जिसमें कि तू बैठा है। मुझे भगवन् (अब) उपदेश दे।' इति।

उस (कन्या) का मुंह ग्रहण करते (रैक्व) बोला—'हटा ले इन्हें शूद्र, इसी मुंहके लिये कहूँगा।' इति]

भृ (ढोना पालना) सकर्मक, परस्मैपदी, सेट्—

लट्	बिभृते	बिभ्राते	बिभ्रते
	बिभृषे	बिभ्राथे	बिभृध्वे
	बिभ्रे	बिभृवहे	बिभृमहे
लिट्	बभ्रे	बभ्राते	बभ्रिरे
	बभृषे	बभ्राथे	बभृढ्वे
	बभ्रे	बभृवहे	बभृमहे
लुट्	भर्ता	भर्तारौ	भर्तारः
लृट्	भरिष्यते	भरिष्येते	भरिष्यन्ते
लोट्	बिभृतां	बिभ्रातां	बिभ्रतां
लङ्	अबिभृत	अबिभ्रातां	अबिभ्रत
	अबिभृथाः	अबिभ्राथां	अबिभृध्वं
	अबिभ्रि	अबिभृवहि	अबिभृमहि
लिङ् (विधि)	बिभ्रीत	बिभ्रीयातां	बिभ्रीरन्
	बिभ्रीथाः	बिभ्रीयाथां	बिभ्रीध्वं
	बिभ्रीय	बिभ्रीवहि	बिभ्रीमहि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लिङ् (आशीः)	भृषीष्ट	भृषीयास्तां	भृषीरन्
	भृषीष्ठाः	भृषीयास्थां	भृषीध्वं
	भृषीय	भृषीवहि	भृषीमहि
लुङ्	अभृत	अभृषातां	अभृषत
	अभृथाः	अभृषाथां	अभृध्वं
	अभृषि	अभृष्वहि	अभृष्महि
लृङ्	अभरिष्यत	अभरिष्येतां	अभरिष्यन्त
सन्नन्त	बुभृषीते,	बुभृषांचक्रे	
णिजन्त	भारयते		

दा (देना) सकर्मक, आत्मनेपदी, अनिट्—

लट्	दत्ते	ददाते	ददते
	दत्से	ददाथे	दद्ध्वे
	ददे	दद्वहे	दद्महे
लिट्	ददे	ददाते	ददिरे
लृट्	दास्यते	दास्येते	दास्यन्ते
लोट्	दत्तां	ददातां	ददतां
लङ्	अदत्त	अददातां	अददत
	अदत्थाः	अददाथां	अदद्ध्वं
	अददि	अदद्वहि	अदद्महि
लिङ् (विधि)	ददीत	ददीयातां	ददीरन्
लिङ् (आशीः)	दासीष्ट	दासीयास्तां	दासीरन्
लुङ्	अदित	अदिषातां	अदिषत
लृङ्	अदास्यत	अदास्येतां	अदास्यन्त
सन्नन्त	दित्सते		
णिजन्त	दापयते		

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

षोडशः पाठः

चेटी—(विदूषकं उपगम्य) आर्य मैत्रेय, आर्या धूता त्वां आह्वयति । एषा तिष्ठति, उपसर्प ।

विदूषकः—(उपसृत्य) स्वस्ति भवत्यै ।

वधूः—आर्य, वन्दे । आर्य, पुरस्तात् मुखो भव ।

विदूषकः—एष भवति, पुरस्तात् सुखः संवृत्तः ।

वधूः—प्रतीच्छ इमाम् ।

विदूषकः—किं इदम् ?

वधूः—अहं खलु रत्नषष्ठ्युपासिता आसम् । तत्र यथाविभवं ब्राह्मणः प्रतिग्राहयितव्यः । स च न प्रतिग्राहितः । तत् तस्य कृते प्रतीच्छ इमां रत्नमालिकाम् ।

विदूषकः—(गृहीत्वा) स्वस्ति, गमिष्यामि प्रियवयस्यस्य निवेदयिष्यामि ।

वधूः—मा खलु मां लज्जितां कुरु ।

विदूषकः—(सविस्मयं) अहो अस्या महानुभावता !

चारुदत्तः—चिरयति मैत्रेयः । मा नाम वैकल्याद् अकार्यं कुर्यात् । मैत्रेय, मैत्रेय ।

विदूषकः—(उपसृत्य) एतां (रत्नावलीं दर्शयति ।)

चारुदत्त—किं एतत् ।

विदूषकः—भोः, यत् ते सदृशदारसंग्रहस्य फलम् ।

चारुदत्तः—कथं ब्राह्मणी मां अनुकम्पते ? कष्टं, इदानीं अस्मि दरिद्रः—

आत्मभागक्षतद्रव्यः स्त्रीद्रव्येणानुकंपितः ।
अर्थतः पुरुषो नारी सा नारी ह्यर्थतः पुमान् ॥

—मृच्छकटिक (शूद्रक)

[दासी—(विदूषक के पास आ) आर्य मैत्रेय, आर्या धूता तुम्हें बुलाती हैं। यह खड़ी हैं, पास जाओ ।

विदूषक—(पास जा कर) मंगल, आपका ।

बहू—आर्य वन्दे, आर्य पूर्वमुख हो जा ।

विदूषक—भवती, यह पूर्वमुख हो गया ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

बहू—लो इसे।

विदूषक—क्या (है) यह ?

बहू—मैंने रत्नषष्ठीका उपवास किया था। उसमें विभवके अनुसार ब्राह्मणको दान देना होता है, और वह नहीं दिया। सो इसके लिये लो इस रत्नमालाको।

विदूषक—स्वस्ति आपकी। जाऊँगा, प्रिय मित्र को निवेदन करूँगा।

बहू—मत मुझे लज्जित करो।

विदूषक—(विस्मयके साथ) अहो, इसकी महानुभावता ?

चारुदत्त—देर कर रहा है मैत्रेय। परेशानीके कारण कुछ अकरणीय न कर बैठे। मैत्रेय, मैत्रेय।

विदूषक—(पास आ) इसे (रत्नावली को दिखाता है।)

चारुदत्त—क्या (है) यह ?

विदूषक—भो, जो कि तुम्हारे योग्य पत्नीके ग्रहणका फल (होना चाहिये)।

चारुदत्त—क्यों, ब्राह्मणी मुझपर दया कर रही है ? कष्टं, अब मैं हूँ दरिद्र—

अपने हिस्सेके नष्ट द्रव्यवाला स्त्रीके धनसे अनुकंपाप्राप्त।
वस्तुतः (वह) पुरुष नारी, वह नारी वस्तुतः पुरुष है ॥]

उपसृत्य (पास जा) स्वस्ति (मंगल हो) पुरस्तात् (पूर्व दिशा) प्रतीच्छ (ले, लोट्) उपासिता (उपवास किया था) प्रतिग्रहः (दान) महानुभावता (बड़प्पन) वैकल्यं (विकलता) सदृशः (उचित, योग्य) दारसंग्रहः (विवाह) अनुकंपितः (अनुकंपा किया गया)।

भावप्रत्यय—

अकर्मक धातु में प्रत्यय के लगने पर कर्ता तृतीया विभक्ति का होता है और क्रिया एक वचन तथा प्रथम पुरुष की ही, जैसे—

लट्	तेन, त्वया,	मया भूयते	(मेरे द्वारा हुआ जाता है)
लिट्		बभूवे	(,, हुआ गया)
लुट्		भाविता, भविता	(,, हुआ जायेगा)
लृट्		भाविष्यते	(,, ,,)
लोट्		भूयतां	(,, हुआ जाये)
लङ्		अभूयत	(,, हुआ गया)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लिङ् (विधि)	भूयेत	(मेरे द्वारा हुआ जाये)
लिङ् (आशीः)	भाविषीष्ट	(” ”)
लुङ्	अभावि	(” हुआ गया)
लृङ्	अभाविष्यत	(” हुआ जाये तो)

भू + य + ते = भूयते ।

सप्तदशः पाठः

अथ खलु भगवान् आनुपूर्वेण चारिकां चरन् यत्र वाराणसी ऋषिपतनं मृगदावः, यत्र च पंचवर्गीया भिक्षवः, तत्र उपसंचक्रमे । अपश्यँश्च खलु पञ्चवर्गीया भिक्षवो भगवन्तं दूरत एव आगच्छन्तम् । दृष्ट्वा च अन्योन्यं संस्थापयांचक्रुः—'अयं किल श्रमणो गौतम आगच्छति बाहुलिकः प्रधान-विभ्रान्तः, आवृत्तो बाहुल्याय । स न अभिवादयितव्यः, प्रत्युत्थातव्यः । नास्य पात्र-चीवरं प्रतिग्रहीतव्यम् । अपि च खलु आसनं स्थापयितव्यं, आकांक्षेत चेद् निषेत्स्यति' इति । यथा यथा खलु भगवान् पञ्चवर्गीयान् भिक्षून् उपसंक्रमति, तथा तथा ते न अशक्नुवन् स्वकीयायां कृतिकायां संस्थातुम् । भगवन्तं प्रत्युद्गम्य एको भगवतः पात्र-चीवरं प्रत्यग्रहीत्, एक आसनं प्रज्ञापयांचकार, एकः पादोदकं पादपीठं उपन्यक्षिपत् । न्यषीदद् भगवान् प्रज्ञप्ते आसने ।—महावग्ग (विनयपिटक), महास्कन्धक

[तब भगवान् क्रमशः विचरते जहाँ वाराणसी ऋषिपतन मृगदाव (सारनाथ) और जहाँ पञ्चवर्गीय भिक्षु (थे), वहाँ पहुँचे । देखा दूर से ही पञ्चवर्गीय भिक्षुओं ने भगवान् को आते और देख कर आपस में तै किया—'बटोरू, तपभ्रष्ट, बटोरने की ओर लौटा यह श्रमण गौतम (है) । उसे न अभिवादन, न प्रत्यु-त्थान करना चाहिये, न इसका पात्र-चीवर लेना चाहिये । आसन रख देना चाहिये, यदि चाहे तो बैठेगा' । इति । जैसे जैसे भगवान् पञ्चवर्गीय भिक्षुओंके पास पहुंच रहे थे, वैसे वैसे (वे) अपनी बात पर नहीं दृढ रह सके । भगवान्की अगवानी करके एक ने भगवान्का पात्र-चीवर लिया, एक ने आसन बिछाया, एक ने पादोदक पादपीठ रक्खा । भगवान् बिछे आसन पर बैठे ।]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

सुयोधनेन कुरुपतिना आहूता पांडवा हस्तिनापुरं अव्राजिषुः। तत्र पांडवज्येष्ठो युधिष्ठिरो द्यूतेन, हारितं च स्वं राज्यं पत्न्या सह। बहूक्तं सुहृद्भिः—'क्षाम्यन्तु अस्मान्, नोपकार्यं किमपि कृतम्'। तैः स्वदेशं विहाय द्वादश अब्दान् देशान्तरेषु पर्यटि।

[कुरुओं के राजा दुर्योधन ने पांडवों के बुलाने पर पांडव हस्तिनापुर गये। वहाँ जेठे पांडव युधिष्ठिर ने जुआ खेला और पत्नी संहित राज्य हार गये। मित्रों ने बहुत कहा—'हमें क्षमा करें, कोई उपकार का कार्य (हमने) नहीं किया' उनके द्वारा स्वदेश छोड़ बारह वर्ष पर्यटन किया गया]।

दिवादि गणका धातु दिव् (खेलना), परस्मैपदी—

लट्	दीव्यति	दीव्यतः	दीव्यन्ति
लिट्	दिदेव	दिदिवतुः	दिदिवुः
	दिदेविथ	दिदिवथुः	दिदिव
	दिदेव	दिदिविव	दिदिविम
लुट्	देविता	देवितारौ	देवितारः
लृट्	देविष्यति	देविष्यतः	देविष्यन्ति
लोट्	दीव्यतु	दीव्यतां	दीव्यन्तु
लङ्	अदीव्यत्	अदीव्यतां	अदीव्यन्
लिङ् (विधि)	दीव्येत्	दीव्येतां	दीव्येयुः
लिङ् (आशीः)	दीव्यात्	दीव्यास्तां	दीव्यासुः
लुङ्	अदेवीत्	अदेविष्टां	अदेविषुः
लृङ्	अदेविष्यत्	अदेविष्यतां	अदेविष्यन्

णिजन्त—देवयति, सन्नन्त—दिदीविषति, यङन्त—देदीव्यते

सीव् (सीना) तृप् (तर्पण) ष्ठीव् (थूकना) मुह् (मूढ़ होना) नृत् (नाचना) स्निह (स्नेह करना) युध् (लड़ना) भ्रम् (भ्रमण करना) पुष् (पोसना) क्षम् (सहना) शुष् (सूखना) क्लम् (थकना) तुष् (तुष्ट होना) तृष् (प्यासना) क्रुध् (क्रुद्ध होना) कुप् (कुपित होना) क्षुभ् (क्षुब्ध होना) मृग् (ढूँढ़ना) ।]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

अष्टादशः पाठः

माल्यवान् पार्वतीशापाद् अवतीर्य महीतलम् ।
अमात्यः सुचिरं भूत्वा शातवाहनभूपतेः ॥ १ ॥
गुरुर्गुणवतां लोके गुणाढ्य इति विश्रुतः ।
काणभूतिं समासाद्य शापबन्धाद् अमुच्यत ॥ २ ॥
अभूतां दाक्षिणात्यस्य द्विजातेः सोमशर्मणः ।
वत्स-गुल्माभिधौ पुत्रौ श्रुतार्था कन्यका तथा ॥ ४ ॥
गते सभार्ये कालेन त्रिदिवं सोमशर्मणि ।
श्रुतार्था यौवनवती भ्रात्रोश्चिन्तावहाऽभवत ॥ ५ ॥

—बृहत्कथामंजरी (क्षेमेन्द्र), कथापीठ लंबक, गुच्छ ३

[पार्वतीके शापसे माल्यवान् पृथिवीपर जन्म ले,
शातवाहन राजाका बहुत काल तक मंत्री रहा ॥ १ ॥
संसारमें गुणियोंका गुरु (बड़ा) गुणाढ्य नाम से प्रसिद्ध (हो) ।
काणभूतिको पा कर शापके बन्धनसे मुक्त हुआ ॥ २ ॥
दक्षिणी ब्राह्मण सोम शर्माके वत्स और गुल्म नामक
दो पुत्र तथा श्रुतार्था (नाम्नी) कन्या हुई ॥ ४ ॥
काल पा कर भार्या-सहित सोम शर्माके गत हो जाने पर,
श्रुतार्था युवती होकर दोनों भाइयोंके लिये चिन्ताकरी हो गई ॥ ५ ॥]

सु (जनना) दिवादिगणी, आत्मनेपदी, सकर्मक, सेट्—

लट्	सूयते	सूयेते	सूयन्ते
लिट्	सुषुवे	सुषुवाते	सुषुविरे
	सुषुविषे	सुषुवाथे	सुषुविध्वे
	सुषुवे	सुषुविवहे	सुषुविमहे
लुट्	सविता	सवितारौ	सवितारः
लृट्	सविष्यते	सविष्येते	सविष्यन्ते
लोट्	सूयतां	सूयेतां	सूयन्तां
लङ्	असूयत	असूयेतां	असूयन्त

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लिङ् (विधि)	सूयेत	सूयेयातां	सूयेरन्
लिङ् (आशीः)	सविषीष्ट	सविषीयास्तां	सविषीरन्
लृङ्	असविष्यत	असविष्येतां	असविष्यन्त

णिजन्त–सावयति, सन्नन्त–सुषविषते, यङन्त–सोषूयते

[दू–दूयते (दुखी होता) तप्–तप्यते (तपता है) डी–डीयते (उड़ता है) खिद्–खिद्यते (खेद करता है) चिखिदे (लिट्), ली–लीयते (लीन होता है), मन्–मन्यते (मानता है)।]

एकोनविंशः पाठः

उपकोसलो हि कामायनः सत्यकामे जाबाले ब्रह्मचर्यं उवास। तस्य ह द्वादश वर्षाणि अग्नीन् परिचचार। स ह अन्यान् अन्तेवासिनः समावर्तयन् तं ह स्म एव न समावर्तयति ?

तं जाया उवाच—'तप्तो ब्रह्मचारी कुशलं अग्नीन् परिचचारीत्। मा त्वा अग्नयः परिप्रवोचनम् , प्रब्रूहि अस्मै' इति।

तस्मै ह अप्रोच्य एव प्रवासांचक्रे॥ २॥

स ह व्याधिना अनशितुं दध्रे। तं आचार्य–जाया उवाच—

'ब्रह्मचारिन् , अशान किं नु नाश्नासि ?' इति।

स ह उवाच—'बहवः इमे अस्मिन् पुरुषे कामा नाना अत्ययाः। व्याधिभिः प्रतिपूर्णोऽस्मि, न अशिष्यामि' इति॥ ३॥

अथ ह अग्नयः समूदिरे—'तप्तो ब्रह्मचारी, कुशलं नः पर्यचारीद्, हन्त अस्मै प्रब्रवाम' इति तस्मै ह ऊचुः॥ ४॥

—छान्दोग्य उपनिषद्, अध्याय ४, खंड १०

[उपकोसल कामायनने सत्यकाम जाबालके पास ब्रह्मचर्य-वास किया। (उसने) बारह वर्ष तक उसकी अग्नियों की सेवा की। (वह सत्यकाम) दूसरे अन्तेवासियोंको समावर्तित करते उसका समावर्तन नहीं करता था।

उस (सत्यकाम) से पत्नीने कहा—'तप किया ब्रह्मचारीने, अच्छी तरह अग्नियों की सेवा की। तुझे अग्नियें बुरा न कहें। इसे बतला दे' इति।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

(सत्यकाम) बिना बतलाये ही यात्रा पर चला गया ।

उसके व्याधि के कारण अनशन करना शुरू किया। उसे आचार्य-पत्नी ने कहा—'

—'ब्रह्मचारी, खा, क्यों नहीं खाता ?' इति ।

उस (उपकोसल) ने कहा—'इस पुरुष में बहुत सी कामनायें, अनेक बाधायें होती हैं । व्याधियों से पूर्ण हूँ, नहीं भोजन करूँगा ।' इति ॥ ३ ॥

तब अग्नियोंने सलाह की—'तप किया ब्रह्मचारी ने, अच्छी तरह हमारी सेवा की । हन्त, इसे बतलायें इति । उसे उन्होंने बतला दिया]

कामलायनः (कमलगोत्री) परिचचार (परिचर्या की, लिट्) अन्तेवासो (शिष्य) समावर्तन (शिक्षासमाप्ति) स्म (था) त्वा (तुभ्यं, तुझे) मा परिप्रवोचन् (मत बुरा कहें) प्रवासः (यात्रा करना) दध्रे (धारण किया, लिट्) अनशितुं (न खानेको) अशान (खा, लोट्) कामाः (कामनायें) समूदिरे (मिल कर बात की) हन्त (खेदजनक अव्यय) पर्यचारीद् (परिचर्या की) ।

कर्मप्रत्यय—सकर्मक, क्रियाओंके कर्म प्रथमा विभक्तिके साथ आने पर कर्ता तृतीयामें आता है, इसे कर्म प्रत्ययवाली क्रिया कहते हैं,

(भरण करना) कर्मप्रत्ययान्त, आत्मनेपदी, सेट्—

लट्	भ्रियते	भ्रियेते	भ्रियन्ते
लिट्	बभ्रे	बभ्राते	बभ्रिरे
लुट्	भर्ता, भारिता	भर्तारौ	भर्तारः
लृट्	भरिष्यते, भारिष्यते	भरिष्येते	भरिष्यन्ते
लोट्	भ्रियतां	भ्रियातां	भ्रियन्तां
लङ्	अभ्रियत	अभ्रियातां	अभ्रियन्त
लिङ् (विधि)	भ्रियेत	भ्रियेयातां	भ्रियेरन्
लिङ् (आशीः)	भृषीष्ट, भारिषीष्ट	भारिषीयास्तां	भृषीरन्, भारिषीरन्
लुङ्	अभारि	अभारिषातां	अभारिषत
लृङ्	अभारिष्यत	अभारिष्येतां	अभारिष्यन्त

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

भावप्रत्यय का भी रूप ऐसा ही होता है। गम् (जाना) का भाव में

लट्	गम्यते	गम्येते	गम्यन्ते
लिट्	जग्मे	जग्माते	जग्मिरे
लृट्	गंस्यते	गंस्येते	गंस्यन्ते
लोट्	गम्यतां	गम्येतां	गम्यन्तां
लङ्	अगम्यत	अगम्येतां	अगम्यन्त
लिङ् (विधि)	गम्येत	गम्येयातां	गम्येरन्
" (आशीः)	गंसीष्ट	गंसीयास्तां	गंसीरन्
लुङ्	अगामि	अगामिषातां	अगामिषत
लृङ्	अगमिष्यत	अगमिष्येतां	अगमिष्यन्त

हन् (मारना) कर्मप्रत्ययान्त,

लट्	हन्यते	हन्येते	हन्यन्ते
लिट्	जघ्ने	जघ्नाते	जघ्निरे
लृट्	हनिष्यते	हनिष्येते	हनिष्यन्ते
लोट्	हन्यतां	हन्येतां	हन्यन्तां
लिङ् (विधि)	हन्येत	हन्येयातां	हन्येरन्
" (आशीः)	घानिषीष्ट	घानिषीयास्तां	घानिषीरन्
लुङ्	अघानि	अघानिषातां	अघानिषत
लृङ्	अहनिष्यत	अहनिष्येतां	अहनिष्यन्त

छिद् (छेदन करना) कर्म प्रत्यय

लट्	छिद्यते	छिद्येते	छिद्यन्ते
लिट्	चिच्छिदे	चिच्छिदाते	चिच्छिदिरे
लुट्	छेत्ता	छेत्तारौ	छेत्तारः
लोट्	छिद्यतां	छिद्येतां	छिद्यन्तां

लिङ् (विधि) छिद्येत, लिङ् (आशीः)—छित्सीष्ट,
लुङ् – अच्छेदि लृङ्—अच्छेत्स्यत

धर्मेण लोको बभ्रे—धर्म द्वारा लोक धारा जा रहा है।

भृषीरन् दारिका भवद्भिः—आप सबके द्वारा लड़कियां पाली जायें।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

जंबूद्वीपे पुण्यस्थानानि अस्माभिः अगामिषत—भारतमें पुण्य स्थान हमारे द्वारा गये हुये हैं।

रावणः रामेण अहन्यत—रावण रामद्वारा मारा गया।

विंशः पाठः

अथ ह याज्ञवल्क्यस्य द्वे भार्ये बभूवतुः मैत्रेयी च कात्यायनी च। तयोर्हि मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी बभूव, स्त्रीप्रज्ञैव तर्हि कात्यायनी। अथ ह याज्ञवल्क्योऽन्यद् उद्वृत्तं अपाकरिष्यन् ॥ १ ॥

'मैत्रेयी,' इति ह उवाच याज्ञवल्क्यः 'प्रव्रजिष्यन् वा अरे अहं अस्मात् स्थानाद् अस्मि हन्त, तेऽनया कात्यायन्या अन्तं करवाणि' इति ॥ २ ॥

सा ह उवाच मैत्रेयी—'यत् नु मे इयं भगो, सर्वा पृथिवी वित्तेन पूर्णा स्यात्, स्यां नु अहं तेन अमृता अहो न' इति।

'न'—इति ह उवाच याज्ञवल्क्यः—'यथा एव उपकरणवतां जीवितं तथैव ते जीवितं स्याद्। अमृतत्वस्य तु न आशाऽस्ति वित्तेन' इति॥ ३॥ सा ह उवाच मैत्रेयी—'येन अहं न अमृता स्यां, किं अहं तेन कुर्याम्? यद् एव भगवन् वेद, तद् एव मे ब्रूहि' इति ॥ ४ ॥

स ह उवाच याज्ञवल्क्यः—'प्रिया वै खलु नो भवती। एतत् ते व्याख्यास्यामि, इति ते व्याचक्षाणस्य तु मे निदिध्यासस्व' इति। स ह उवाच—'न वा अरे पत्युः कामाय पतिः प्रियो भवति, आत्मनस्तु कामाय पतिः प्रियो भवति। न वा अरे, जायायै कामाय जाया प्रिया भवति, आत्मनस्तु कामाय जाया प्रिया भवति। न वा अरे पुत्राणां कामाय पुत्राः प्रिया भवन्ति, आत्मनस्तु कामाय पुत्राः प्रिया भवन्ति। न वा अरे वित्तस्य कामाय वित्तं प्रियं भवति, आत्मनस्तु कामाय वित्तं प्रियं भवति। न वा अरे पशूनां कामाय०। ०ब्रह्मणः कामाय०। ०क्षत्रस्य कामाय०। ०लोकानां कामाय०। ०देवानां कामाय०। ०वेदानां कामाय०। ०भूतानां कामाय०। ०सर्वस्य कामाय०। ०सर्वं प्रियं भवति,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

आत्मनस्तु कामाय सर्वं प्रियं भवति। आत्मा वा अरे, द्रष्टव्यः श्रोतव्यो मन्तव्यो, निदिध्यासितव्यः। मैत्रेयि, आत्मनि खलु अरे दृष्टे श्रुते मते विज्ञाते इदं सर्वं विदितम् ॥ ५ ॥

(बृहदारण्यक, अध्याय ४, ब्राह्मण ५)

[तब याज्ञवल्क्य की दो पत्नीयाँ थीं, मैत्रेयी और कात्यायनी। उनमें मैत्रेयी ब्रह्मवादिनी थी, कात्यायनी तो स्त्रियों की ही बुद्धिवाली थी। तब याज्ञवल्क्य ने दूसरा काम हटाया ॥ १ ॥

'मैत्रेयी', इति याज्ञवल्क्य ने कहा 'इस स्थानसे मैं जा रहा हूँ। हन्त, तुझे इस कात्यायनी से अलग कर दूँ' इति ॥ २ ॥

उस मैत्रेयी ने कहा—'यदि भगवन्, मेरे लिये पृथिवी सारी धन से पूर्ण हो, तो क्या मैं उससे अमर हो जाऊँगी या नहीं ?'

—'न' इति याज्ञवल्क्य ने कहा—'जैसा ही साधनवालों का जीवन (होता है), वैसा ही तेरा जीवन होगा। अमरताकी तो धन से आशा नहीं' इति ॥३॥

वह मैत्रयी बोली—'जिससे मैं अमर नहीं होऊँगी, उससे क्या मैं करूँ ? जो भगवान् जानते हैं, वही मुझे बतावें।' इति ॥ ४ ॥

वह याज्ञवल्क्य बोले—'हमारी प्रिया है तू। तुझे यह बतलाता हूँ, मेरी कहीको ध्यान कर' इति ॥

उन्होंने कहा—'नहीं अरे, पतिकी कामनासे पति (किसीको) प्रिय होता है, आत्माकी (अपनी) कामनाके लिये पति प्रिय होता है। नहीं अरे, पत्नीकी कामनाके लिये पत्नी प्रिया होती है, आत्माकी कामनाके लिये पत्नी प्रिया होती है। ०पुत्रोंकी कामनाके लिये०। ०धनकी कामनाके लिये०। ०पशुओंकी कामनाके लिये०। ०ब्राह्मणकी कामनाके लिये०। ०क्षत्रियकी कामनाके लिये०। ०लोकोंकी कामनाके लिये०। ०देवताओंकी कामनाके लिये०। ०वेदोंकी कामनाके लिये०। ०प्राणियोंकी कामनाके लिये०। नहीं सबकी कामनाके लिये सब प्रिय होता है, आत्माकी (अपनी) कामनाके लिये सब (चीजें) प्रिय होता है। अरे, आत्मा दर्शन–योग्य, श्रवण–योग्य, मनन–योग्य, ध्यान–योग्य है। मैत्रेयी, अरे आत्माके दृष्ट-श्रुत-मनन-कृत (और) विज्ञात होने पर यह सब विदित (हो जाता है) ॥ ५ ॥]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

स्त्रीप्रज्ञा (स्त्री जैसे सामान्य बुद्धिवाली) उद्वृत्तं (साधारण जीवन) अपाकरिष्यन् (हटाते) प्रव्रजिष्यन् (प्रव्रजित होते) अन्तः (अलगाव) भगोः (हे भगवन्) वित्तं (धन) भवती (आप, स्त्रीलिंग) व्याचक्षाणः (कहता) निदिध्यासस्व (ध्यान करो) आत्मा (आप) कामः (कामना, इच्छा) जाया (पत्नी) ब्रह्म (ब्राह्मण) क्षत्रः (क्षत्रिय) भूतानि (प्राणी) मन्तव्यः (मनन करणीय) निदिध्यासितव्यः (ध्यान-योग्य)।

स्वादिगणी सु (स्नान करना) उभयपदी, सकर्मक, अनिट्—

लट्	सुनुते	सुन्वाते	सुन्वते
	सुनुषे	सुन्वाथे	सुनुध्वे
	सुन्वे	सुनुवहे	सुनुमहे
लिट्	सुषुवे	सुषुवाते	सुषुविरे
लुट्	सोता	सोतारौ	सोतारः
लृट्	सोष्यते	सोष्येते	सोष्यन्ते
लोट्	सुनुतां	सुन्वातां	सुन्वतां
	सुनुष्व	सुन्वाथां	सुनुध्वं
	सुनवै	सुनवावहै	सुनवामहै
लङ्	असुनुत	असुन्वातां	असुन्वत
लिङ् (विधि)	सुन्वीत	सुन्वीयातां	सुन्वीरन्
लिङ् (आशीः)	सोषीष्ट	सोषीयास्तां	सोषीरन्
लुङ्	असोष्ट	असोषातां	असोषत
	असोष्ठाः	असोषाथां	असोढ्वं
	असोषि	असोष्वहि	असोष्महि
लृङ्	असोष्यत	असोष्येतां	असोष्यन्त

सन्नन्त—सुषावयिषते । णिजन्त—सावयति । यङन्त—सोषूयते । यङ्लुगन्त—सोषूवीति । कर्मणि—सूयते (सवन किया जाता है)।

स्वादि शक् (सकना) अकर्मक, परस्मैपदी, अनिट्—

लट्	शक्नोति	शक्नुतः	शक्नुवन्ति
	शक्नोसि	शक्नुथः	शक्नुथ

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

	शक्नोमि	शक्नुवः	शक्नुमः
लिट्	शशाक	शेकतुः	शेकुः
	शशकथ	शेकथुः	शेक
	शशाक, शशक	शेकिव	शेकिम
लुट्	शक्ता	शक्तारौ	शक्तारः
लृट्	शक्ष्यति	शक्ष्यतः	शक्ष्यन्ति
लोट्	शक्नोतु	शक्नुतां	शक्नुवन्तु
	शक्नुहि	शक्नुतं	शक्नुत
	शक्नवानि	शक्नवाव	शक्नवाम
लङ्	अशक्नोत्	अशक्नुतां	अशक्नुवन्
	अशक्नोः	अशक्नुतं	अशक्नुत
	अशक्नवं	अशक्नुव	अशक्नुम
लिङ् (विधि)	शक्नुयात	शक्नुयातां	शक्नुयुः
लिङ् (आशीः)	शक्यात्	शक्यास्तां	शक्यासुः
लुङ्	अशकत्	अशकतां	अशकन्
लृङ्	अशक्ष्यत	अशक्ष्यतां	अशक्ष्यन्

शक् (सकना) अत्मनेपदी—

लट्—शक्यते लिट्—शेके लुट्—शक्ता
लृट्—शक्ष्यते लोट्—शक्यतां लङ्—अशक्यत
लिङ् (विधि)—शक्येत लिङ् (आशीः)—शक्षीष्ट लुङ्—अशाकि
लृङ्—अशक्ष्यत

ऐसे ही निम्न के भी रूप होते हैं—

आप् (परस्मैपदी) आप्नोति (पाता है) । साध् (परस्मैपदी) साध्नोति (साधता है) । ची (उभयपदी) चिनोति (चयन करता है)। धु (उभयपदी) धुनोति (कंपाता, धुनता है ।)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

एकविंशः पाठः

अतीते तक्षशिलायां बोधिसत्त्वो दिशाप्रमुख आचार्यो भूत्वा पंच-माणवकशतानि मंत्रान् वाचयति स्म । तस्य एको माणवकः पापको नाम अभूत् । स 'एहि पापक', 'याहि पापक' इति उच्यमानः अचिन्तयत्—'मम नाम अपमङ्गलं, अन्यत् नाम मे आधारयिष्यामि' इति । स आचार्य उपसंक्रम्य–'आचार्य, मम नाम अपमङ्गलं, अन्यत् नाम कुरुत' इति आह ।

अथ एनं आचार्यः अवोचत्—'गच्छ तात्, जनपदचारिकं चरित्वा आत्मनोऽभिरुचितं एकं मङ्गलं नाम गृहीत्वा एहि । आगतस्य ते नाम परिवर्त्य अन्यत् नाम करिष्यामि' इति ।

स 'साधु' इति पाथेयं गृहीत्वा निष्क्रान्तो ग्रामात् ग्रामं चरन् एकं नगरं प्राप्तः । तत्र चैकः पुरुषः कालकृतो जीवको नाम नाम्ना । स तं ज्ञातिजनेन आदाहनं नीयमानं दृष्ट्वा 'किं नाम एष पुरुष' इति अपृच्छत् । 'जीवको नाम एष' इति । 'जीवकोऽपि म्रियते ?' इति । जीवकोऽपि म्रियते, अजीवकोऽपि म्रियते, नाम तु प्रज्ञप्तिमात्रम् । त्वं बाल इति मन्ये' ।

—नामसिद्धि–जातक ९७ ।

[पुराने समयमें बोधिसत्त्व तक्षशिलामें दिशाप्रसिद्ध आचार्य होकर पांच सौ विद्यार्थियोंको वेद बंचाते थे । उनका एक विद्यार्थी पापक (पापी) नामक था । उसने 'आ पापी, जा पापी' कहे जाते सोचा—'मेरा नाम अमङ्गलसूचक है, दूसरा नाम धरवाउँगा' इति । वह आचार्य के पास जाकर बोला—'आचार्य, मेरा नाम अमङ्गलसूचक है, दूसरा नाम धर दें' ।

तब उसे आचार्य ने कहा—'जा तात, देशमें चारिका करके अपनी रुचिका एक मङ्गल नाम (ढूंढ) ला । आने पर बदल कर तेरा दूसरा नाम रख दूंगा' इति ।

वह 'अच्छा' कह पाथेय ले एक गाँवसे दूसरे गाँवमें घूमता एक नगरमें पहुँचा । और वहाँ एक पुरुष जीवक नामका मर गया था । उसने उसे जाति वालों द्वारा जलानेको ले जाते देख कर 'यह पुरुष किस नामका है' यह पूछा ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

'जीवक नामक है यह'। 'जीवक भी मरता है?' 'जीवक भी मरता है, अजीवक भी' नाम तो कहने मात्रका होता है, जाने तू मूर्ख है]।

तुदादिगणी सकर्मक तुद् (पीड़ा करना) परस्मैपदी—

लट्	तुदति	तुदतः	तुदन्ति
लिट्	तुतोद	तुतुदतुः	तुतुदुः
लुट्	तोत्ता	तोत्तारौ	तोत्तारः
लृट्	तोत्स्यति	तोत्स्यतः	तोत्स्यन्ति
लोट्	तुदतु	तुदतां	तुदन्तु
लङ्	अतुदत्	अतुदतां	अतुदन्
लिङ् (विधि)	तुदेत्	तुदेतां	तुदेयुः
लिङ् (आशीः)	तुद्यात	तुद्यास्तां	तुद्यासुः
लुङ्	असौत्सीत्	अतौत्तां	अतौत्सुः
लृङ्	अतोत्स्यत्	अतोत्स्यतां	अतोत्स्यन्

ऐसे ही नुद् (प्रेरणा करना) परस्मैपदी के रूप भी—

तुदादिगणी मृ (मरना) अकर्मक अनिट् धातु के रूप लट्, लोट्, लङ्, लिङ्, लुङ् में आत्मनेपदी होते हैं और लकारों में परस्मैपदी।

लट्	म्रियते	म्रियेते	म्रियन्ते
	म्रियसे	म्रियेथे	म्रियध्वे
	म्रिये	म्रियावहे	म्रियामहे
लिट्	ममार	मम्रतुः	मम्रुः
लुट्	मर्ता	मर्तारौ	मर्तारः
लृट्	मरिष्यति	मरिष्यतः	मरिष्यन्ति
लोट्	म्रियतां	म्रियेतां	म्रियन्तां
लङ्	अम्रियत	अम्रियेतां	अम्रियन्त
लिङ् (विधि)	म्रियेत	म्रियेयातां	म्रियेरन्
लिङ् (आशीः)	मृषीष्ट	मृषीयास्तां	मृषीरन्
लुङ्	अमृत	अमृषातां	अमृषत

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लृङ् अमरिष्यत् अमरिष्यतां अमरिष्यन्

निम्न भी तुदादिगणी परस्मैपदी धातु हैं—

दिश्—दिशति (कहता है)

पृच्छ्—पृच्छति (पूछता है)

विन्द्—विन्दति (पाता है)

क्षिप्—क्षिपति (फेंकता है)

सिच्—सिंचति (सींचता है)

निम्न आत्मनेपदी हैं—

जुष्—जुषते (सेवाकरता है)

धृ—ध्रियते (धरता है)

लज्ज्—लज्जते (लजाता है)

आदृ—आद्रियते (आदर करता है)

द्वाविंशः पाठः

भगवतः किल भिक्षुसंघपरिवृतस्य साकेते अंजनवनप्रवेशकाल एकः साकेतनगरवासी वृद्धो ब्राह्मणो नगरतो बहिर्गच्छन् अन्तरद्वारे दशबलं दृष्ट्वा पादयोः पतित्वा गुल्फौ गाढं गृहीत्वा उवाच—'तात, ननु नाम पुत्रैः जीर्णकाले मातापितरौ परिचरणीयौ? कस्माद् एतावत्कालं अस्माकं आत्मानं न अदर्शयः? मया तु दृष्टोऽसि, मातरमपि द्रष्टुं एहि' इति शास्तारं गृहीत्वा आत्मनो गेहं अगमत्। शास्ता तत्र गत्वा प्रज्ञप्ते आसने न्यषीदत्। ब्राह्मणी अपि 'इदानीं मे पुत्र आगत' इति आगत्य शास्तुः पादयोः पतित्वा 'तात, एतावत्कालं कुत्र गत आसीः? ननु नाम माता-पितरौ वृद्धौ उपस्थातव्यौ' इति परिदेवयांचकार। पुत्रान् दुहितॄरपि 'एहि, भ्रातरं वंदध्वं' इति वन्दापयांचकार। उभौ तुष्टमानसौ महादानं अदुः। शास्ता भक्तकृत्यं निष्ठाप्य ताभ्यां उभाभ्यां जरासूत्रं अकथयत्, उत्थाय आसनाच्च अंजनवनमेव अगमत्।

—साकेतजातक ६८

[भिक्षुसंघसे घिरे भगवान्‌को अयोध्या में अंजनवनमें प्रवेश करते समय एक साकेतवासी वृद्ध ब्राह्मणने नगरसे बाहर जाते फाटकके भीतर दशबलको देख कर दोनों चरणोंमें पड़ दोनों एड़ियोंको दृढ़तासे पकड़ कर कहा—'तात,

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

पुत्रोंको बुढ़ापेके समय माँ-बापकी सेवा करनी चाहिये ? क्यों इतने समय तक अपनेको हमें नहीं दिखलाया ? मैंने तो देखा, माँको भी देखने चल', यह कह बुद्धको लिये अपने घर गया। बुद्ध वहाँ जा बिछे आसन पर बैठे। ब्राह्मणी भी 'अब मेरा पुत्र आया' यह (कहती) आकर बुद्धके पैरोंमें पड़ कर 'तात, इतने समय तक कहाँ गया था ? बूढ़े माता-पिताकी सेवा करनी चाहिये ना' कहती रोने लगी। पुत्रों और बेटियोंसे भी 'आओ भाईकी वंदना करो' कहती वन्दना करवाई। दोनों ने तुष्ट मन हो खूब भोजन कराया। बुद्ध ने भोजन समाप्त कर उन दोनोंको 'जरा सूत्र' का उपदेश दिया और आसनसे उठ कर अंजनवन चले गये]।

साकेत (अयोध्या) दशबल (बुद्ध) परिचरणीयः (सेवनीय) शास्ता (उपदेशक, बुद्ध) प्रज्ञप्तं (बिछा) परिदेवयांचकार (रोई)।

रुधादिगणी सकर्मक उभयपदी अनिट् रुध् (रूंधना, रोकना) धातु—

लट्	रुणद्धि	रुन्धः	रुन्धन्ति
	रुणत्सि	रुन्धः	रुन्ध
	रुणध्मि	रुन्ध्वः	रुन्ध्मः
लिट्	रुरोध	रुरुधतुः	रुरुधुः
	रुरोधिथ	रुरुधथुः	रुरुध
	रुरोध	रुरुधिव	रुरुधिम
लुट्	रोद्धा	रोद्धारौ	रोद्धारः
लोट्	रुणद्धु	रुन्धां	रुन्धन्तु
	रुन्धि	रुन्धं	रुन्ध
	रुणधानि	रुणधाव	रुणधाम
लङ्	अरुणत्	अरुन्धां	अरुन्धन्
	अरुणः	अरुन्धं	अरुन्ध
	अरुणधं	अरुन्ध्व	अरुन्ध्म
लिङ् (विधि)	रुन्ध्यात्	रुन्ध्यातां	रुन्ध्युः
लिङ् (आशीः)	रुन्ध्यात्	रुध्यास्तां	रुध्यासुः

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लुङ्	अरौत्सीत्	अरौद्धां	अरौत्सुः
लृङ्	अरोत्स्यत्	अरोत्स्यतां	अरोत्स्यन्

आत्मनेपदी—

लट्	रुन्धे	रुन्धाते	रुन्धते
	रुन्त्से	रुन्धाथे	रुन्ध्वे
	रुन्धे	रुन्ध्वहे	रुन्ध्महे
लिट्	रुरुधे	रुरुधाते	रुरुधिरे
लुट्	रोद्धा	रोद्धारौ	रोद्धारः
लृट्	रोत्स्यते	रोत्स्येते	रोत्स्यन्ते
लोट्	रुन्धां	रुन्धातां	रुन्धतां
	रुन्त्स्व	रुन्धाथां	रुन्ध्वं
	रुणधै	रुणधावहै	रुणधामहै
लङ्	अरुन्ध	अरुन्धातां	अरुन्धत
	अरुन्धाः	अरुन्धाथां	अरुन्ध्वं
	अरुन्धि	अरुन्ध्वहि	अरुन्ध्महि
लिङ् (विधि)	रुन्धीत	रुन्धीयातां	रुन्धीरन्
लङ् (आशीः)	रुत्सीष्ट	रुत्सीयास्तां	रुत्सीरन्
लुङ्	अरुद्ध	अरुत्सातां	अरुत्सत
लृङ्	अरोत्स्यत	अरोत्स्येतां	अरोत्स्यन्त

सन्नन्त-रुरुत्सते णिजन्त-रोधयति यङन्त-रोरुध्यते यङ्लुगन्त-रोरोद्धि

ऐसी ही निम्न भी—

पिष्-पिनष्टि (पीसता है) भिद्-भिनत्ति (तोड़ता है) छिद्-छिनत्ति (छेदता है) तृद्-तृणत्ति (मारता है) युज्-युनक्ति (जोड़ता है) भुज्-भुनक्ति (भोगता है) हिंसि-हिनस्ति (मारता है)

अरुणत् यवनः साकेतं—यवन (दिमित्रि) ने अयोध्याको घेर लिया।
देवा असुरान् पर्वतैः पिपिषुः—देवताओं ने असुरोंको पर्वतोंसे पीस दिया।
मा भुंजीथाः परस्य धनं—दूसरेके धन को मत खाओ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

स स्वं बन्धनं अच्छैत्सीत्—उसने अपना बंधन काट दिया ।
को हिनस्ति कश्च युनक्ति कार्ये ?—कौन नाश करता और कौन कार्यमें जुड़ता है ?

त्रयोविंशः पाठः

'अधीहि भगव' इति ह उपससाद सनत्कुमारं नारदः। तं ह उवाच—'यद् वेत्थ, तेन मा उपसीद । ततः ते ऊर्ध्वं वक्ष्यामि' इति ॥ १ ॥

स ह उवाच—'ऋग्वेदं भगवः, अध्येमि, यजुर्वेदं, सामवेदं, आथर्वणं चतुर्थं, इतिहास-पुराणं पंचमं वेदानां वेदं, पित्र्यं, राशिं, दैवं, निधिं, वाकोवाक्यं, एकायनं, देवविद्यां, ब्रह्मविद्यां, भूतविद्यां, क्षत्रविद्यां, नक्षत्रविद्यां, सर्पदेवजनविद्यां एतद् भगवः, अध्येमि ॥ २ ॥

सोऽहं भगवः, मंत्रविद् एव अस्मि, न आत्मवित् । श्रुतं हि एव मे भगवद्दृशेभ्यः—'तरति शोकं आत्मविद्' इति सोऽहं भगवः, शोचामि, तं मा भगवान् शोकस्य पारं तारयतु' इति ।

तं ह उवाच—'यद् वै किंचिद् एतद् अध्यगीष्ठाः, नाम एव एतत् ॥३॥
'नाम वा ऋग्वेदो यजुर्वेदः सामवेद आथर्वणश्चतुर्थः' ।

—छान्दोग्योपनिषद्, अध्याय ७, खंड १ ।

['पढ़ाओ, भगवान्' कहते नारद सनत्कुमारके पास गया। उन्हें (सनत्कुमारने) कहा—'जो जानते हो, उसे मेरे पास बतलाओ । तब आगे तुम्हें मैं बतलाऊँगा।'

वह (नारद) बोला—'भगवन्, ऋग्वेद पढ़ा, यजुर्वेद, सामवेद, चौथे आथर्वण, वेदोंके वेद पांचवें इतिहास-पुराण, पितर (विद्या), राशि, दैव (विद्या), निधि (०), वाकोवाक (वादविद्या), एकायन, देवविद्या, ब्रह्मविद्या, क्षत्रियविद्या, नक्षत्रविद्या, सर्प-देवजन-विद्याको पढ़ा । यह भगवन्, पढ़ा ॥ २ ॥

'सो मैं भगवन्, मंत्रज्ञ ही हूँ, आत्मज्ञ नहीं । भगवान् जैसोंसे ही मैंने सुना है—'आत्मवेत्ता शोकसे पार होता है' । सो मैं भगवन्, शोच करता हूँ, उस मुझे भगवान् शोकके पार पहुँचायें' इति ।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

उसे (सनत्कुमार ने) कहा—'जो कुछ यह तुमने पढ़ा, यह नाम ही है ॥३॥ 'नाम है ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, चतुर्थ आथर्वण०']

भगवः (भगवान् का संबोधन) वेत्थ (तू जानता है) उपससाद (पास गया) उपसीद (पास आ) पित्र्यं (पितरों संबंधी विद्या) दैवं (भाग्यविद्या) ।

तन्वादिगणी उभयपदी, सकर्मक, सेट् तनु (विस्तार करना) धातु—

लट्	तनोति	तनुतः	तन्वन्ति
	तनोषि	तनुथः	तनुथ
	तनोमि	तनुवः	तनुमः
लिट्	ततान	तेनतुः	तेनुः
लुट्	तनिता	तनितारौ	तनितारः
लृट्	तनिष्यति	तनिष्यतः	तनिष्यन्ति
लोट्	तनोतु	तनुतां	तन्वन्तु
लङ्	अतनोत्	अतनुतां	अतन्वन्
लिङ् (विधि)	तनुयात्	तनुयातां	तनुयुः
लिङ् (आशीः)	तन्यात्	तन्यास्तां	तन्यासुः
लुङ्	अतानीत्	अतानिष्टां	अतानिषुः
लृङ्	अतनिष्यत्	अतनिष्यतां	अतनिष्यन्

आत्मनेपदी—

लट्	तनुते	तन्वाते	तन्वते
लिट्	तेने	तेनाते	तेनिरे
लुट्	तनिता	तनितारौ	तनितारः
लृट्	तनिष्यते	तनिष्येते	तनिष्यन्ते
लोट्	तनुतां	तन्वातां	तन्वतां
लङ्	अतनुत	अतन्वातां	अतन्वत
लिङ् (विधि)	तन्वीत	तन्वीयातां	तन्वीरन्
लिङ् (आशीः)	तनिषीष्ट	तनिषीयास्तां	तनिषीरन्
लुङ्	अतनिष्ट	अतनिषातां	अतनिषत
लृङ्	अतनिष्यत	अतनिष्येतां	अतनिष्यन्त

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

ऐसे ही उभयपदी कृ (करना) के रूप—

लट्	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
	करोमि	कुर्वः	कुर्मः
लिट्	चकार	चक्रतुः	चक्रुः
लुट्	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः
लृट्	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
लोट्	करोतु	कुरुतां	कुर्वन्तु
लङ्	अकरोत्	अकुरुतां	अकुर्वन्
लिङ् (विधि)	कुर्यात्	कुर्यातां	कुर्युः
लिङ् (आशीः)	क्रियात्	क्रियास्तां	क्रियासुः
लुङ्	अकार्षीत्	अकार्ष्टां	अकार्षुः
लृङ्	अकरिष्यत्	अकरिष्यतां	अकरिष्यन्

आत्मनेपदी—

लट्	कुरुते	कुर्वाते	कुर्वते
लिट्	चक्रे	चक्राते	चक्रिरे
लुट्	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः
	कर्तासे	कर्तासाथे	कर्ताध्वे
	कर्ताहे	कर्तास्वहे	कर्तास्महे
लृट्	करिष्यते	करिष्येते	करिष्यन्ते

लेट्—वेदोंकी भाषामें आने वाले बहुतसे अपवाद क्रिया रूपोंका नाम है जो किसी एक कालको नहीं बतलाते ।

लोट्	कुरुतां	कुर्वातां	कुर्वतां
लङ्	अकुरुत	अकुर्वातां	अकुर्वत
लिङ् (विधि)	कुर्वीत	कुर्वीयातां	कुर्वीरन्
लिङ् (आशीः)	कृषीष्ट	कृषीयास्तां	कृषीरन्
लुङ्	अकृत	अकृषातां	अकृषत

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लुङ् (मा योगे) मा कृथाः मा कृषाथां मा कृढ्वं
लृङ् अकरिष्यत अकरिष्येतां अकरिष्यन्त

सन् (उभयपदी) सनुते (देता है) क्षण् (उभय०) क्षणुते (हानि०) क्षिणु (उभयपदी) क्षिणुते (क्षीण करता) वन् (आत्मने०) वनुते (माँगता है) मन् (आत्मने०) मनुते (मानता है)।

अन्यायेन यशः क्षिणुते—अन्यायसे यश क्षीण होता है।

मा सनुध्वं कृपणाद् धनम्—कृपणसे धन मत मांगो।

मा कृथाः परद्रव्येप्साम्—दूसरेके द्रव्यकी प्राप्तिकी इच्छा मत करो।

अमन्वि तत् कर्तुं न इदानीं कर्तासे—मानता था वह करना, अब उसे नहीं करेगा।

कृषीष्ट भद्रं भवतां महाजनः—जनता आपका कल्याण करे।

तनुध्वमस्याः सुखमप्यहर्निशम्—इसका सुख भी रात-दिन करो।

चतुर्विंशः पाठः

अश्वत्थपत्रतरलान्यायूंषि किल देहिनाम्।
किन्तु नागार्जुनस्यासीत् तत्स्थैर्यकरणे श्रमः॥ ३६२॥
चिरायुरिति भूपालश्चिरायुर्नगरेऽभवत्।
रससिद्धोऽभवत् तस्य मंत्री नागार्जुनाभिधः॥ ३६३॥
राज्ञस्तदौषधजुषो याते वर्षशताष्टके।
भार्यापुत्राश्च बहवः कालेन त्रिदिवं गताः॥ ३६४॥
ततो जीवहरं नाम यौवराज्ये स भूपतिः।
विदधे तनयं सोऽपि मात्रे हृष्टो न्यवेदयत्॥ ३६५॥
साऽवदद् 'बहवः पुत्रा यौवराज्ये महीभुजा।
अभिषिक्ताः पुरा तेन दिवं याताः क्षतायुषः॥ ३६६॥
चिरायुरेष नृपतिर्नागार्जुनकृतौषधैः।
द्विषष्टिवर्षतां प्राप्तो न कदाचिद् विनंक्ष्यति'॥ ३६७॥

(बृहत्कथामंजरी (क्षेमेन्द्र) लंबक १४। आख्या० ९)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

पीपलके पत्तेकी देहधारियोंकी आयु चंचल है ।
किन्तु उसको स्थिर करनेकी नागार्जुन में शक्ति थी ।। ३९२ ।।
चिरायुनगरमें चिरायु नामक राजा हुआ ।
उसका मंत्री नागार्जुन नामक रस बनानेमें सिद्ध था ।। ३९३ ।।
उसकी दवा सेवन करने वाले राजाको एक सौ आठ वर्ष हो गये ।
(इस) कालमें बहुतसे (उसके) पुत्र और भार्यायें मर गईं ।। ३९४ ।।
तब उस राजाने जीवहर नामक पुत्रको युवराज बनाया ।
उसने भी हर्षित हो माता से कहा ।। ३९५ ।।
उस (माता) ने कहा—'राजाने पहिले भी बहुतसे पुत्र युवराजपद पर अभिषिक्त किये, (वे सब) आयु क्षीण हो कर मर गये ।। ३९६ ।।
यह राजा नागार्जुनकी की हुई ओषधियों से चिरायु,
बासठ वर्ष को प्राप्त है, (वह) कभी नहीं मरेगा' ।। ३९७ ।।

स्थैर्यकरणं (स्थायी करना) औषधजुषः (औषध सेवन करने वालेका) दिवंगतः (मरा) महीभुग् (पृथ्वी भोगने वाला, राजा) क्षतायु (नष्ट आयु वाला) विनंक्ष्यति (नष्ट होगा) ।

क्र्यादिगणी सकर्मक उभयपदी अनिट्, क्री (बेचना) धातु—

लट्	क्रीणाति	क्रीणीतः	क्रीणन्ति
	क्रीणासि	क्रीणीथः	क्रीणीथ
	क्रीणामि	क्रीणीवः	क्रीणीमः
लिट्	चिक्राय	चिक्रियतुः	चिक्रियुः
	चिक्रयिथ	चिक्रियथुः	चिक्रिय
	चिक्राय	चिक्रियिव	चिक्रियिम
लुट्	क्रेता	क्रेतारौ	क्रेतारः
लृट्	क्रेष्यति	क्रेष्यतः	क्रेष्यन्ति
लोट्	क्रीणातु	क्रीणीतां	क्रीणन्तु
	क्रीणीहि	क्रीणीतं	क्रीणीत
	क्रीणानि	क्रीणाव	क्रीणाम

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लङ्	अक्रीणात्	अक्रीणीतां	अक्रीणन्
	अक्रीणाः	अक्रीणीतं	अक्रीणीत
	अक्रीणां	अक्रीणीव	अक्रीणीम
लिङ् (विधि)	क्रीणीयात्	क्रीणीयातां	क्रीणीयुः
लिङ् (आशीः)	क्रीयात्	क्रीयास्तां	क्रीयासुः
लुङ्	अक्रैषीत्	अक्रैष्टां	अक्रैषुः
	अक्रैषीः	अक्रैष्टं	अक्रैष्ट
	अक्रैषं	अक्रैष्व	अक्रैष्म
लृङ्	अक्रेष्यत्	अक्रेष्यतां	अक्रेष्यन्

आत्मनेपदी—

लट्	क्रीणीते	क्रीणाते	क्रीणते
	क्रीणीषे	क्रीणाथे	क्रीणिध्वे
	क्रीणे	क्रीणीवहे	क्रीणीमहे
लिट्	चिक्रिये	चिक्रियाते	चिक्रियिरे
	चिक्रियिषे	चिक्रियाथे	चिक्रियिध्वे
	चिक्रिये	चिक्रियिवहे	चिक्रियिमहे
लुट् (म० पु०)	क्रेतासे	क्रेतासाथे	क्रेताध्वे
लृट्	क्रेष्यते	क्रेष्येते	क्रेष्यन्ते
लोट्	क्रीणीतां	क्रीणातां	क्रीणतां
	क्रीणीष्व	क्रीणाथां	क्रीणीध्वं
	क्रीणै	क्रीणावहै	क्रीणामहै
लङ्	अक्रीणीत	अक्रीणातां	अक्रीणत
	अक्रीणीथाः	अक्रीणाथां	अक्रीणीध्वं
	अक्रीणि	अक्रीणीवहि	अक्रीणीमहि
लिङ् (विधि)	क्रीणीत	क्रीणीयातां	क्रीणीरन्
	क्रीणीथाः	क्रीणीयाथां	क्रीणीध्वं
	क्रीणीय	क्रीणीवहि	क्रीणीमहि

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

लिङ् (आशीः)	क्रेषीष्ट	क्रेषीयास्तां	क्रेषीरन्
लुङ्	अक्रेष्ट	अक्रेषातां	अक्रेषत
	अक्रेष्ठाः	अक्रेषाथां	अक्रेढ्वं
	अक्रेषि	अक्रेष्वहि	अक्रेष्महि
लृङ्	अक्रेष्यत	अक्रेष्येतां	अक्रेष्यन्त

सन्नन्त-चिक्रषीति णिजन्त-क्रापयति यङन्त-चेक्रीयते यङ्लुगन्त-चेक्रेति

प्री (उभयपदी) प्रीणाति, प्रीणीते (तृप्त करता है) सि (उभयपदी) सिनाति, सिनीते (बांधता है) शॄ (उभयपदी) शृणाति, शृणीते (हिंसा करता है) लू (उभयपदी सेट्) लुनाति, लुनीते (काटता है)।

ज्ञा (जानना, परस्मैपदी, अनिट्) जानाति (लट्, लिट्, विधिलिङ्, लङ् में जान् , बाकी में ज्ञा होता है) ज्ञाता, ज्ञास्यति ।

बन्ध (परस्मैपदी, अनिट) बध्नाति (बांधता है) मन्थ (परस्मैपदी, सेट् मथ्नाति (मथता है) ग्रंथ् (परस्मैपदी, सेट्) ग्रथ्नाति (ग्रन्थन करता है, गांठ०) क्लिश् (परस्मैपदी, सेट्) क्लिश्नाति (क्लेशित होता है) अश् (परस्मैपदी, सेट्) अश्नाति (खाता है)

पञ्चविंशः पाठः

श्रावस्त्यां हि काणमाता नाम दुहितृवशेन प्रकटनामा उपासिका अभूत् । सा दुहितरं काणां अन्यतरस्मिन् ग्रामे समानजातीयाय पुरुषाय अदात् । काणा केन चिद् करणीयेन मातृगृहं आगच्छत् ।

अथ तस्याः स्वामिकः कतिपयदिनात्ययेन दूतं प्राहिणोत्—'आगच्छतु काणा, इच्छामि काणाया आगतं' इति । काणा दूतस्य वचनं श्रुत्वा 'अम्ब, गमिष्यामि' इति । मातरं अपृच्छत् । काणमाता 'एताव-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

त्कालं उषित्वा कथं तुच्छहस्ता एव गमिष्यसि' इति अपूपं पपाच ! तस्मिन् काले एको भिक्षुः तस्या गेहं अगमत् । उपासिका तस्मै पात्रपूरं भोजनं अदात् । निष्क्रम्य अन्यं अकथयत् । तस्मै अपि तथैव अदात् । सोऽपि निष्क्रम्य अन्यस्मै अकथयत् । तस्मै अपि तथैव अदात्, इति चतुर्भ्यो जनेभ्यः प्रदाने अपूपाः परिक्षयं गताः । काणाया गमनं न समपद्यत ।

अथ अस्याः स्वामिकोऽन्यं अपि दूतं प्राहिणोत् ! तदाऽपि तथैव अभूत् । काणा न गन्तुं अशक्नोत् । तृतीयं दूतं च स्वामिकः प्राहिणोत् , अभाणयच्च दूतमुखेन—'काणा इदानीं नागमिष्यति चेद्, अहं अन्यां भार्यां आनेष्यामि' इति । इदानीमपि तेन एव व्यतिक्रमेण काणा न गता । काणायाः स्वामिकेन अन्या भार्या आनीता । तां प्रवृत्तिं श्रुत्वा सा रोदन्ती अतिष्ठत् ।

—वब्बुजातक, १३७

[श्रावस्तीमें बेटीके कारण काणमाताके नामसे प्रसिद्ध उपासिका थी । उसने (अपनी) बेटी काणाको किसी गाँव में अपनी जातिके पुरुषको दिया था । काणा किसी कामसे माताके घर आई ।

तब उसके पति ने कुछ दिन बाद दूत भेजा—'काणा आवे, काणाका आगमन चाहता हूँ' । काणा ने दूतकी बात सुन कर माँ से पूछा । काणमाता ने 'इतने दिन रह कर कैसे खाली हाथ ही जायेगी' यह सोच पूआ पकाया । उसी समय एक भिक्षु उसके घरमें आ गया । उपासिका ने उसे पात्र भर कर भोजन दिया । उसने निकल कर दूसरेको कहा । उसे भी वैसे ही दिया । इस प्रकार चार जनोंको देनेमें पूये खतम हो गये । काणाका गमन नहीं हो सका ।

तब उसके स्वामी ने दूसरे भी दूतको भेजा । तब भी वैसा ही हुआ । काणा नहीं जा सकी । तीसरे दूतको स्वामी ने भेजा और दूत के मुँहसे कहलवाया—'काणा इस बार नहीं आई, तों मैं दूसरी पत्नी लाऊँगा' इति । इस बार भी उसी व्यतिक्रमसे काणा नहीं गई । काणाका पति दूसरी पत्नी लाया । इस समाचारको सुन कर काणा रोने लगी ।]

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

चुरादिगणी उभयपदी सकर्मक सेट् चुर् (चुराना) धातु—

लट्	चोरयति	चोरयतः	चोरयन्ति
लिट्	चोरयाञ्चकार	चोरयाञ्चक्रतुः	चोरयाञ्चक्रुः
लुट्	चोरयिता	चोरयितारौ	चोरयितारः
लृट्	चोरयिष्यति	चोरयिष्यतः	चोरयिष्यन्ति
लोट्	चोरयतु	चोरयतां	चोरयन्तु
लङ्	अचोरयत्	अचोरयतां	अचोरयन्
लिङ् (विधि)	चोरयेत्	चोरयेतां	चोरयेयुः
लिङ् (आशीः)	चोर्यात्	चोर्यास्तां	चोर्यासुः
लुङ्	अचूचुरत्	अचूचुरतां	अचूचुरन्
लृङ	अचोरयिष्यत्	अचोरयिष्यतां	अचोरयिष्यन्

आत्मनेपदी—

लट्	चोरयते	चोरयेते	चोरयन्ते
लिट्	चोरयाञ्चक्रे	चोरयाञ्चक्राते	चोरयाञ्चक्रिरे
लुट् (म० पु०)	चोरयिताहे	चोरयितासाथे	चोरयिताध्वे
लृट्	चोरयिष्यते	चोरयिष्येते	चोरयिष्यन्ते
लोट्	चोरयतां	चोरयेतां	चोरयन्तां
लङ्	अचोरयत	अचोरयेतां	अचोरयन्त
लिङ् (विधि)	चोरयेत	चोरयेयातां	चोरयेरन्
लिङ् (आशीः)	चोरयिषीष्ट	चोरयिषीयास्तां	चोरयिषीरन्
लुङ्	अचूचुरत	अचूचुरेतां	अचूचुरन्त
लृङ्	अचोरयिष्यत	अचोरयिष्येतां	अचोरयिष्यन्त

सन्नन्त—चुचोरयिषति (चुराना चाहता है) वर्ण् (उभयपदी) वर्णयति, वर्णयते (कहता है) भक्ष् (उभ०) भक्षयति, भक्षयते (खाता है) सान्त्व (उभ०) सान्त्वयति, सान्त्वयते (ढारस देता है) स्नेह (उभ०) स्नेहयति, स्नेहयते (स्नेह करता है) ताड् (उभ०) ताडयति, ताडयते (ताड़ता है) खंड (उभ०) खंडयति, खंडयते (तोड़ता है) वंट (उभ०)

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

वंटयति, वंटयते (बांटता, काटता है) मंड् (उभ०) मंडयति, मंडयते (मंडन करता है) चुद्—चोदयति (प्रेरणा करता है) तुल्—तोलयति (तौलता है) दुल्—दोलयति (डुलाता है) पिंड्—पिंडयति (पिंड बनाता है) बुक्क—बुक्कयति (भूंकता है) मुच्—मोचयति (छुड़ाता है) दृ—दारयति (फाड़ता है) दल्—दालयति (दलन करता है) वर्ज्—वर्जयति (बरजता है) ग्रन्थ—ग्रन्थयति (गाँठ देता है) चुम्ब—चुम्बयति (चूमता है) चूर्ण—चूर्णयति (चूर्ण करता है) पूज्—पूजयति (पूजता है) मार्ज—मार्जयति (मार्जन करता है) कीर्त—कीर्तयति (कहता है) पाल—पालयति (पालता है) गर्ह—गर्हयति (निन्दता है) मार्ग—मार्गयति (ढूँढ़ता है) कथ—कथयति (कहता है) वर्ध—वर्धयति (बढ़ाता है) ध्वन—ध्वनयति (ध्वनि करता है) मूत्र—मूत्रयति (मूतता है) चित्र—चित्रयति (चित्रण करता है) मिश्र—मिश्रयति (मिलाता है) वच—वाचयति (बांचता है)

अचूचुरत् धनं चौरः वणिजः—चोर ने बनिये का धन चुराया था।

अचूचुदत् तस्य यशः कीर्तयितुम्—उसके यश को कहने की प्रेरणा की।

दोलयांचकार वायुः वनलताम्—हवाने वनलताको डुलाया।
जग्रन्थुः पुष्पस्रजः जनाः—लोगोंने फूलोंकी मालायें गूंथीं।
अपूपुजत् सुगतं स बालकः—उस बालकने बुद्धको पूजा।
अचीकथत् चारु चरित्रमस्य—उसके सुन्दर चरितको कहा।

—०॰॰०—

षड्विंशः पाठः

तस्मिन् समये अनाथपिंडदो गृहपतिः पंचभिः शकटशतैः भांडं आदाय राजगृहं गत्वा आत्मनः प्रियसहायस्य श्रेष्ठिनो गेहे अतिष्ठत्। तत्र बुद्धस्य भगवतो प्रादुर्भावं श्रुत्वा प्रत्यूषसमये उपसंक्रम्य भगवतो मुखात् धर्मं श्रुत्वा द्वितीयदिने बुद्धसहिताय संघाय महादानं दत्त्वा श्राव-

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

स्त्यां आगमनाय शास्तुः प्रतिज्ञां गृहीत्वा श्रावस्तीं परावृत्तः। तत्र च अष्टादशभिः हिरण्यकोटिभिः जेतवनं क्रीणित्वा विहारं कारयितुमारब्धवान्। स मध्ये दशबलस्य गन्धकुटिं कारयांचकार, तां परिवार्य अशीतिमहास्थविराणां आवासान्, अन्यानि च वेश्मानि, पुष्करिणीश्च निर्माप्य दशबलस्य आगमनार्थं दूतं प्रैषयत्। —जातक निदानकथा

[उस समय अनाथपिंडक गृहपति पांच सौ गाड़ियोंपर सौदा ले राजगृह जा अपने प्रिय मित्र सेठके घरमें ठहरा। वहां भगवान् बुद्ध के प्रादुर्भावकी खबर सुन कर अतिप्रातः पास जा भगवान्‌के मुँहसे धर्म सुन दूसरे दिन संघसहित बुद्धको भोजन प्रदान कर श्रावस्ती आनेके लिए शास्तासे स्वीकृति ले श्रावस्ती लौट गया। और वहां अठारह करोड़ अशर्फियोंसे जेतवनको खरीद कर विहार बनवाना आरंभ किया। उसने बीचमें (बुद्धकी) गन्धकुटी बनवाई। उसके घेरे अस्सी महास्थविरोंके निवास, दूसरे घर और पुष्करिणियां बनवा बुद्धके आनेके–लिये दूत भेजा]।

नामधातु—आचरण या कामनाके अर्थमें नामसे भी धातुका काम लिया जाता है। वह उभयपदी अर्थात् परस्मैपदी और आत्मनेपदी दोनों होता है, जैसे—

बालति, बालायते (बालकपन करता है), पुत्रीयति (पुत्र चाहता है।)

बालति; बालायते, मूर्खति, मूर्खायते, पण्डितति, पण्डितायते मातरति, मातरायते।

लट्	बालति	बालायते
लिट्	बालांचकार	बालयांचक्रे
लुट्	बालिता	
लृट्	बालिष्यति	बालयिष्यते
लोट्	बालतु	बालायतां
लङ्	अबालत्	अबालायत
लिङ् (विधि)	बालेत्	बालायेत
लिङ् (आशीः)	बाल्यात्	बालायिषीष्ट
लुङ्	अबालीत्	अबालायिष्ट
लृङ्	अबालिष्यत्	अबालायिष्यत

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

पुत्रीयति (पुत्र चाहता है) के रूप होंगे—

लट्-पुत्रीयति लिट्-पुत्रीयांचकार लुट्-पुत्रीयिता लृट्-पुत्रीयिष्यति लोट्-पुत्रीयतु लङ्-अपुत्रीयत लिङ् (विधि)-पुत्रीयेत् लिङ् (आशीः)-पुत्रीयात् लुङ्-अपुत्रीयीत्, लृङ्-अपुत्रीयिष्यत्।

लेट्में वे क्रियायें मानी जाती हैं, जिनका प्रयोग वेद में आता है, और जो नियमों के अपवादके उदाहरण हैं। उनके कुछ उदाहरण हैं—

तारिषत् तारयति (तारता) पताति पतति (गिरती है) भवाति भवति (होता है) मादयैते मादयेते (मदयुक्त करते हैं) ईशै ईशे (प्रभुत्व करता है) मरते म्रियते (मरता है)।

इति सांकृत्यायनीयायां संस्कृतपाठमालायां तृतीयं पुस्तकं समाप्तम्।

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

CC-0. Agamnigam Digital Preservation Foundation, Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant

संस्कृत पाठमाला

(१–५ भाग)

प्रथम भाग ०–६०, द्वितीय भाग ०–८५, तृतीय भाग ०–८५,
चतुर्थ भाग ०–८५, पंचम भाग १–००, संपूर्ण ४–१५

महापण्डित राहुल सांकृत्यायन

स्वतन्त्र भारत के हरएक बालक और बालिका को संस्कृत का ज्ञान होना परमावश्यक है। बिना इसके राष्ट्रभाषा हिन्दी पर पूरा अधिकार हो ही नहीं सकता। इसी लिये संस्कृत को सुगमता से सीखने के लिये सांकृत्यायन जी ने इस पुस्तक को पाँच भागों में बाँट कर बहुत ही सरल ढंग से लिखा है। पाँचों भागों के पढ़ जाने से संस्कृत भाषा तथा छन्द और अलंकार का इतना ज्ञान हो जायगा कि आप रामायण-महाभारत ही नहीं, कालिदास आदि महान् कवियों की कृतियों का रस भी मूल भाषा में ले सकते हैं।

प्राप्तिस्थानम्

चौखम्बा विद्याभवन

पो. बा. नं. ६९, चौक, वाराणसी–१